तृतीय अध्याय

नरेन्द्र कोहली की कहानियों में चित्रित समस्याएँ

तृतीय अध्याय

नरेन्द्र कोहली की कहानियों में चित्रित समस्याएँ :

आधुनिक कथाकारों में नरेन्द्र कोहली का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता हैं। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता हैं। इसका मतलब यह हुआ कि, समकालीन साहित्य में तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब नजर आता हैं। साहित्यकार का सम्बन्ध समाज से अटूट हैं। उपन्यास, कहानी, नाटक आदि विधोओं के माध्यम से सामाजिक जीवन को अंकित करने का काम साहित्यकार करता है। नरेन्द्र कोहली ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज तथा मनुष्य के विभिनन समस्याओं को रोखांकित करने का प्रयास किया हैं। उनकी प्रारंभिक कहानियाँ आत्म–केंन्द्रित रही हैं।

नरेन्द्र कोहली की प्रथम प्रकाशित रचना "दो हाथ" मानी जाती हैं। जो कि सन् 1960 ई. मे लिखी गयी थीं। वे मानव की आस्था, संकल्प, जिजीविषा तथा जीवन के अन्तर्बाहय संघर्षो को लेकर कहानी के क्षेत्र में अग्रसर हूए।" उन्होंने प्राथः मध्यवर्ग को ही अपनी कहानियों का विषय बनाया हैं। यही वर्ग निरन्तर अर्थ की चक्की में बुरी तरह पिसता जा रहा हैं। धार्मिक अन्ध विश्वासो ने उनकी साँस को अवरुध्द कर रखा हैं।"1 वंश और परिबारगत मिथ्यादम्भ ने उनकी कमर तोड़ी हैं। धार्मिक रुढ़ियों ने उनकी बुध्दि को भ्रष्ट किया है, सामाजिक विडम्बनाओं ने उन्हें कुंठा–ग्रस्त बनाया है और वह अपने अस्तित्व रक्षा के लिए निरन्र कसमसाता हैं। "नरेन्द्र कोहली ने उसी मध्यवर्ग की समस्याओं का गहराई के साथ अध्ययन किया हैं और अपनी कहानियों के माध्यम से उसी वर्ग की समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है, जो धार्मिक आर्थिक एवं सामाजिक विडम्बनाओं का शिकार बना हुआ हैं, जो निरन्तर मानसिक कुंठाओं में ग्रस्त रहता है ओर जो इतना अकर्मव्य एवं आलसी होता चला जा रहा है कि किसी भी प्रकार की मेहनत का काम करना अपने सम्मान के विरुध्द समजझता हैं"।2

स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में जीवन के यथार्थ विश्लेषण को अधिक महत्व दिया हैं। इस युग के कथाकारों ने प्रसादकालीन कल्पना भूमि को त्यागकर जीवन की हलचल को साहित्य में स्पष्ट रुप से चित्रित किया, क्योंकि युग की बढ़ती हुई समस्याएँ कल्पना के रंगीन सपनों में हल नहीं हो सकती थीं। इस युग के साहित्यकार तत्कालीन स्थिति के व्यापक परिणामों

से छूट नहीं पाए। सच तो यह है कि जीवन को त्यागकर साहित्य की सर्जना संभव ही नहीं और जीवन कभी समस्या रहीत नहीं होता। वर्तमान समय में तो समस्याएँ ही जीवन का पर्याय बन गई है। अतः जीवन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याओ को साहित्यकार साहित्य में चित्रित करता हैं।

नरेन्द्र कोहली ने अपनी कहानियों में जीवन की विभिन्न समस्याओं को चित्रित किया हैं। सुविधा की दृष्टि से उन्हें हम उन निम्नलिखित शीर्षक के अंतर्गत रखते है –

1) नारी समस्या
2) प्रेम की समस्या
3) पारिवारिक समस्या
4) आर्थिक समस्या
5) पति–पत्नी सम्बन्ध की समस्या
6) दिखावटीपन की समस्या
7) विवाह की समस्या
8) अकेलेपन की समस्या
9) टूटते सम्बन्ध की समस्या
10)सामाजिक समस्या
11)धार्मिक समस्या
12) पिता–पुत्र सम्बन्ध समस्या

1) नारी समस्या :

सृष्टि के संचालन के लिए प्रकृति ने नारी और पुरुष की उतपत्ति की। प्राकृतिक शरीर–रचना की दृष्टि से दोनों ही अपने–अपने में अपूर्ण हैं। दोनों एक दूसरे पर अवलम्बित हैं। समाज को विकासमान रखने के लिए नारी और पुरुष की पूर्णता को अत्यंत महत्व हैं। इसमें पुरुष से अधिक नारी का भाग होता हैं। नारी पुरुष के जीवन को माँ, बहन, पत्नी, कन्या के रुप में परिपूर्ण बनाती हैं। फिर भी यह सत्य है कि, पुरुष ने नारी के उदर से जन्म लेकर भी उसके प्रति निष्ठा नहीं निभायी। उसने नारी को हमेशा जीवन के हर क्षेत्र में बाधक बताया। सदियों से पुरुष उसका छल करता आया । फिर भी नारी ने अपनी आँसुओं की धार बहाकर भी आँसुओं के आवेग का हृदयभंग किया हैं।

आजके नये युग ने मनुष्य के सामने जितने आर्थिक और राजनैतिक एवं सामाजिक

12554
A

उलझन भरे प्रश्न रखे है, उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण और कठिन प्रश्न यह है कि, आज के इस नये युग में स्त्री का समाज में कौनसा स्थान रहेगा? वर्तमान अर्थयुग की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि नारी की आर्थिक स्वावलम्बिता आज नारी आर्थिक दृष्टि से अपने पैरों पर खड़ा रहना पसंद करती हैं।3 आज तक पुरुष नारी पर अत्याचार करते रहे कारण नारी उनपर आश्रित थीं। लेकिन आज नारी पुरुष से आर्थिक स्वावलम्बन की मांग करती है। प्रसन्नता की बात है कि परम्परावादी विचारों के लोग आज स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुए पाये गये हैं।

"भारतीय समाज में शताब्दियों से उपेक्षित नारी पुरुष के अत्याचारों से पीडित रहीं। उसके स्वतंत्र अस्तित्व की किसी को कल्पना तक नहीं। निर्जिव पदार्थों के समान उसका क्रय-विक्रय होता रहा। वह असमर्थ है, इसलिए अत्याचार सहती रहीं। समाज में उसका स्थान "भोग्यामात्र" रहा। धीरे-धीरे परिस्थिति अनुकूल पाकर नारी अपनी अलग पहचान बनाती गयीं। आज समाज अत्यन्त तीव्रगति से परिवर्तित हो रहा है।"4 इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। पुरातन काल से नारी समस्या का प्रमुख कारण प्रायः आर्थिक पराधिनता था। वर्तमान काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष के कन्धे से कन्धा लगाकर नौकरी करती हैं। उसकी आर्थिक स्थिति में परिवर्तन आ रहा हैं। फिर भी पुरुष-प्रधान समाज व्यवस्था के कारण नारी समस्या जटिल बनती गयी। आधुनिक युवा के लेखको ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बड़ी गहराई से चित्रित किया है।

नरेन्द्र कोहली ने अपनी कहानियों मे पढ़ी-लिखी अभिजत वर्ग की, मध्यवर्ग की नारियों की समस्याओं पर अपनी लेखनी चलायी हैं। आज चाहे पढ़ी-लिखी, कामकाजी महिला हो या घर की चार दिवारी में रहनेवाली नारी हो सभी वर्ग की नारियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है। नरेंन्द्र कोहली ने अपनी कहानियों में नारी समस्या को चित्रित किया है। -

दो-ढाई और आठ :

कहानी में लेखक ने बताया हे कि नारी कितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो, वह कभी स्वतंत्र नहीं हो सकतीं। वह अपनी इच्छा के अनुसार पेसे खर्च नहीं कर सकतीं। कहानी की नायिका कांति पढ़ी-लिखी युवती हैं। वह शहर के किसी हिस्से में नौकरी करती हैं। वह पैंसे कमाती है, लेकिन अपने लिए एक भी पैंसा खर्च नहीं कर सकतीं। वह दूसरों के लिए

ही पैसा खर्च करती है फिर भी उसे घरवाले पैसों का हिसाब पुछते हैं। उस पर मिथ्या–भाषण का आरोप लगाते हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने नारी की दुर्बलता पर प्रकाश डाला हैं।

मेरा अपना संसार :

कहानी की नायिका अपने माँ के साथ अपने सहेली के घर दिल्ली जा रही हैं। इतने बड़े शहर में सरला के सिवा और कोई भी उसके पहचान का नही था। सरला का भाई उसे लेने के लिए स्टेशन आनेवाला था पर उसे भी वह नहीं जानती थीं। एक अज्ञात–सा भय उसके मन पर छा गया। एक प्रकार की आशंका उसके मन में छा जाती है – "यदि सरला का भाई स्टेशन पर न आया तो? मैं भी तो उसे नहीं पहचानती। कभी देखा नहीं तो पहचानू कैसे? ऐसी स्थिति में क्या होगा? इतने बड़े शहर में मैं कहां जाऊंगी? मैं तो यहां किसी को जानती भी नहीं...."5 इस तरह के सवाल उसके मन में उठ़ते हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि आज भी समाज में नारी की दुर्बलता दिखाई देती हैं। वह पढ़ लिखकर इतनी ऊँची चोटी पर गयी है फिर भी वह स्वतंत्र नहीं हैं। इस कहानी में लेखक ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बड़ी गहराई से चित्रित किया हैं।

शालिग्राम :

कहानी में लेखक ने बताया है कि, नारी का स्थान समाज में अनन्य साधारण हैं.। सृष्टि के संचालन के लिए प्रकृति ने नारी और पुरुष की उतपत्ति की। समाज को विकासमान रखने में पुरुष से अधिक नारी का भाग होता हैं। नारी पुरुष के जीवन को माँ, बहन, पत्नी, कन्या के रुप में परिपूर्ण बनाती हैं। मिसेज शर्मा के माध्यम से लेखक ने नारी कीदयालुता पर प्रकाश डाला हैं। जैसे – "सोचता हूं इतना प्यार करती है मिसेज शर्मा – मूझसे और रीमा से। आदित्य से भी करती हैं, शर्मिला से भी, कितना विशाल हृदय है उनका – देव – हृदय – सा। पर शालिग्राम चलकर किसी के घर तो नहीं जाता न। वह तो अपने स्थान पर ही प्रतिष्ठित रहता हैं।"6 कहानी में नारी की महानता पर भी प्रकाश डाला हैं।

मालिनी :

यह एक प्रेम कहानी है। वर्तमान काल में नारी शिक्षा का प्रचार होने के कारण आज नारी भी पुरुष के कन्धे–से–कन्धा लगाकर काम करती हैं। कहानी की नायिका मालिनी एक

टायपिस्ट हैं। उसी ऑफिस में कहानी नायक सेक्शन ऑफिसर हैं। मालिनी बहुत बोल्ड हैं, पर वह नायक से बहुत शर्माती है। उसके हर निमंत्रण को ठुकराती हैं। असल में वह उसे चाहती है, इसलिए जब वह ऊसे अपनी शादी का कार्ड देता है तो वह उस पर गुस्सा उतारती हैं। वह कहती है – "हाँ–हाँ ठीक कह रही हूं, "इतने दिनों से मैंने जो प्यार तुम्हारे लिए पाला है, मैंने जो सपने देखे हैं, उनका क्या होगा?।"7 लेखक ने यहां नारी समस्या को उभारा हैं। जो सदियों से पुरुष को अपना देवता मानती आयी है, उसके लिए अपना सर्वस्व खो चुकी हैं। बेखबर पुरुष को इसकी खबर तक नहीं।

भूखे बच्चे : सूखी डाली :

इसमें लेखक ने परिस्थिति की विडंबना को चित्रित किया हैं। इस कहानी की नायिका का नाम श्यामली हैं। श्यामली की माँ हमेशा बीमार रहती हैं। घर का बोझ श्यामली ही संभालती हैं। उसका बड़ा भाई अन्ना कारखाने में फौरमैन हैं। अन्ना भी पूरी तरह श्यामली पर ही निर्भर हैं। जब अन्ना की शादी होती है तो उसमें परिवर्तन होता हैं। वह धिरे–धिरे श्यामली को भूलता हैं। श्यामली भी शादी से विरोध करती हैं। लेखक ने यहां नारी समस्या को उजागर किया हैं। श्यामली अपने भाई बहनों के लिए सब कुछ त्यागती हैं। स्वयं अविवाहीत रहती हैं। उसे पता है कि, अन्ना की तरह विवाह होने के बाद ए भी बदल जायेंगे। श्यामली का जीवन सुखी डाली की तरह बनने जा रहा हैं। भास्कर और अन्ना में जब झगड़ा होता है तो छोटे तीनों बच्चों भूखे थें। दूसरे दिन श्यामली उनके लिए दोशे बनाती हैं बच्चे बड़े प्रसन्न होकर खाते हैं। लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि, नारी का अकेला जीवन कितना नीरस हो सकता हैं। जैसा कि, बियाबान, धूप में चिलचिलाती मरुभूमि, जहाँ कहीं भी हरीतिमा नहीं।

पछतावा :

कहानी में नारी के विडंबनाओं को चित्रित किया हैं। विवाह के पूर्व वह मनचाहा बर्ताव करती हैं। लेकिन विवाह के पश्चात् उसे अपने पति और उसके घरवालों ने बताये हूए रास्ते पर चलना पड़ता हैं। उसे अपने इच्छा आकांक्षाओं को मरोडना पड़ता हैं। नारी पूर्णतः परावलंबी बनती हैं। अपने पति की डाँट भी उसे सूननी पड़ती हैं।

"पुरुष "कठोरता" ही "कठोरता" था,
नारी "कोमलता" ही "कोमलता"।"8

पिल्लू :

कहानी में बताया गया है कि, आज-कल नारी पढ़-लिखकर कितना ही ऊँचा स्थान क्यों न प्राप्त करे उसे उपेक्षा भाव से ही देखा जाता हैं। कहानी की नायिका अनीता एक लेखिका बनना चाहती है, वह सर्वगुण संपन्न हैं। उसकी एक कहानी दैनिक "विश्वमित्र" में छप जाती है। वह बहुत प्रसन्न हैं। अपने पति को यह खुश-खबर सुनाती हैं। तो उस पर कोई भी असर नहीं होता वह उन्हें सिर्फ भोग्यवस्तु के रुप में पाना चाहता हैं। नायिका कहती है - "मुझे छुओ मत।" मैं बहुत बड़ी कहानी लेखिका हूं। सम्मान से बात करों।" इस बात पर पति कहता है - "जो कुछ भी हो, मेरी तो पत्नी ही हो न।"9

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से अबला नारी के रुप पर प्रकाश डाला हैं। उसके समस्याओं को चित्रित किया। नारी चाहे कितनी भी पढ़ी-लिखी क्यों न हो? वह स्वतंत्र नहीं हो सकतीं। पुरुष उसपर अत्याचार करता ही आ रहा हैं। वह सब कुछ चुप-चाप सहती हैं।

दूसरे कगार का निषेध :

आज नारी की अहम् भावना जागृत हो चुकी हैं। उसे निरन्तर मानसिक कुंठाओं ने ग्रस्त किया हैं। उसे अपने स्वतंत्र अस्तितव की कल्पना हो रही हैं। वह अपनी अलग पहचान बता रही हैं। नारी ही नारी के पथ की बाधा बनी जा रही हैं। इस कहानी की नायिका पार्वती हैं। उसका नया-नयां विवाह हुआ हैं। वह अपने पति के साथ जब अपने भायके आती है तो उसके साथ उसकी अम्मा बेशगुनी सा बर्ताव करती हैं। अपने दामाद का अपमान करती है। वह अपने पति का भी आदर नहीं करतीं। उसे भी हमेशा अपमानित करती हैं। नारी की कोमलता उसमें नहीं हैं। उसे सिर्फ दिखावटीपन चाहिए इसलिए तो वह गिरिधर साहब के लड़की से अपने लड़के के रिश्ते की बात पक्की कर देती हैं। उसे मर्यादा का ध्यान नहीं हैं। उसके दामाद शालीनता के कारण यह सब सहलेते हैं। उसका अंकार नहीं टूटा, वह अपने लड़की को भी शादीपर निमंत्रित नहीं करती। पार्वती अपने मम्मी के बारे में कहती है - "जीवन भर न उन्होंने अपने पति का सम्मान किया, न किसी से करवाया। वे मेरी बात क्या समझेंगी। हमने बहुत से गुण लिए हैं उनसे, दुर्गण नहीं लेंगे।"10

इस कहानी में नारी के अहंकार पर प्रकाश डाला हैं। साथ-ही-साथ नारी समस्या को चित्रित किया हैं। इसमें नारी ने भारतीय अस्मिता को खो दिया है। यह स्पष्ट होता हैं।

दूसरी आया :

कहानी की नायिका सुधा किसी स्कूल में नौकरी करती हैं। उसका पति भी नौकरी करता है। उनके बेबी को संभालने के लिए वे एक आया को घर लाते हैं। आया अच्छी तरह उसकी देखभाल करती हैं। मगर सुधा को उसपर विश्वास नहीं हैं। वह आया को नौकरी से निकाल देती हैं। घर का सारा काम और बेबी की देखभाल भी सुधा को ही करना पड़ती हैं। फिर भी बेबी का मन सुधा के पासनहींलगता वह उसके हाथों व्दारा दिया गया कोई भी अन्न नहीं खाती, इतना ही नहीं तो सुधा माता होकर भी अपनी रोती हुयी बेबी को चूप नहीं कर सकतीं। सुधीर उसकी देखभाल करता हैं। सुधा ने आया को तो निकाला पर सुधीर को क्या कहती जैसे – "पर सुधीर....? सुधीर से पीछा छुडया जा सकता है क्या?"11

लेखक ने इस कहानी में स्पष्ट किया है कि कामकाजी महिला आज के भारतीय परिवेश में अपनी आर्थिक स्वतंत्रता को एक विशिष्टता के रुप में ले रही है, सहजता के रुप में नही। ऐसी स्थिति में स्त्री पुरुष सम्बन्धों में टकराव अवश्यम्भावी हैं। विवाह अपने आप में जीवन की एक बहुत बड़ी घअना हो सकता है, किनतु सन्तान का जन्म तथं उसका पालन–पोषन–भावना, व्यवहार तथं परिस्थितियों इत्यादी के धरातल पर कहीं अधिक सघन अनुभव है, जो जीवन–क्रम को आपादमस्तक होता हैं।

नींद आने तक :

इस कहानी की नायिका शीला किसी दफतर में नौकरी करती हैं। वह एक बार बसके कंडक्टर और ड्रायव्हर की शिकार बनती हैं। वे उसपर रेप करते हैं। फिर भी उसका पति पूर्णतः दोषी शीला को ही समझता हैं। वह उसे कहता है, "क्या तुम्हारा मर जाना अधिक श्रेयस्कर नहीं थं? तुम मुझे किस मुँह से बताने आयी हो कि तुम्हे दो पुरुषों ने.... यदि तुम पहले न मरीं, तो बाद में मर जाना चाहिए था।"12 अपने देश में आज भी नारी पर अन्याय होता हैं। इसका जिम्मेदार पूर्णतः पुरुष हैं, फिर भी वह नारी को ही दोष देता हैं। वह नारी को ही कलंकित समझता हैं। शीला पर अन्याय हुआ है फिर भी वह एक आदर्श भारतीय नारी हैं। उसमें प्रेरणा हैं। वह ही अंत में समझौता कर लेती है और कहती है – "कल हमारे बच्चें होंगे। उन्हें जब पता चलेगा कि उनकी मां के साथ क्या हुआ, तो क्या वे लोग आत्महत्याएं नहीं करेंगे। हे भगवान। मेरे कारण मेरे पति और मेरे बच्चे....।"13 लेखक ने इस कहानी में नारी की दयनीय स्थिति को उभारा हैं।

2) **प्रेम की समस्या** :

प्रेम एक जटिल संवेग है, इसमें दया, सहानुभूति, ममता, वात्सल्य तथा सर्वाधिक रुपेण का संर्मिलाप होता हैं। प्रेम ही वह महत्वपूर्ण तत्व है जिसके आधार पर यह संसार स्थित है। समस्त सांसारिक संबंध इसी प्रेम के बलपर विदयमान है, प्रेम के कारण ही व्यक्ति-व्यक्ति से संबंध बनाए रखता है, मिल-जुलकर रहता है, परस्पर सहयोग देता है, दूसरों के दु:ख में दुखी एवम् सुख में सुखी होता है। अन्यथा उसके अभाव में सभी मानवीय संबंध कोरे हैं।

प्रेम के अभाव में व्यक्ति की आत्मा कुंठित और बुझी हुई हो जाती है। ऐसी स्थिति में उसे स्नेह की गरमाई की उष्णता की आवश्यकता होती हैं। प्रेम की महतता असीम हैं। स्नेह, करुणा, सहानुभूति और अनुकम्पा से जीवन पूर्ण नहीं बनता, वह प्रेम से पूर्ण बनता हैं।

प्रेम मानव मन की कोमलता मनोभावना है। विभिन्न व्यक्ति इसका विभिन्न रुपेण अनुभव करते हैं। विभिन्न दृष्टिकोन से देखते है एवं विभिन्न अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। कुछ प्यार को उदार बनानेवाला मानते है तो कुछ स्वार्थी बनानेवाला यथार्थ में प्यार पूर्ण समर्पण की अपेक्षं रखता हैं। किन्तु आज के जमाने में प्रेम भी एक समस्या बन गयीं हैं।

राजा दशरथ के बेटे :

कहानी का नायक एक लड़की से प्रेम करता हैं। वह उससे शादी करना चाहता है, मगर उसके घर में पहले ही तीन कुँवारे लड़के है, उनके आगे तो वह नहीं जा सकता था। वह अपनी प्रेमिका को कहता है – "अनी, मैं तुमसे प्रेम करता हूँ। विवाह करना चाहता हूँ पर कर नहीं सकता।' रास्ता जाम हैं। आगे बैलगाडियाँ है, मैं साइकिल पर हूँ। आगे निकलने की राह नहीं हैं। कूद मो सकता नहीं। अनि पिता को रोको, उनको मनाओं यह बैचलर्स उन सदा ऐसा नहीं रहेगा। ठहरों, ठहरों, प्रतीक्षा करों।"14 कहानी में लेखक ने प्रेम की समस्या को चित्रित किया हैं।

गाडीवान :

कहानी का नायक गिरीश, खन्ना साहब की लड़की शान्ति से प्रेम करता हैं। वह उससे विवाह भी करना चाहता हैं। परन्तु उनके पिताजी दहेज लेने पे तुले है वे बीना दहेज के शादी नहीं होने देते। शान्त उनके बिरादरी की नहीं थीं। गिरीश उससे बहुत प्यार करता हैं। वह अनाजीतिय विवाह करने का तेयार है, लेकिन पिताजी से कुछ कह नहीं पाता। अंत में उसे अपने प्यार की कुर्बानी देनी पड़ती हैं। पिताजी का कहा उसे मानना पड़ता हैं। नयी बहु का जब गृह प्रवेश था, उसी समय माताजी ने उनहें चाबियाँ देने को कही तो पिताजी

बोले – क्यों दू चाबियों का गुच्छा इसे? क्या लेकर आयी हैं यह? फटे–पुराने कपड़े थोड़ासा कचरा।"15 आज के समाज के ढोंगी स्वार्थी लोगों का लेखक ने पर्दाफाश किया हैं। साथ ही साथ प्रेम की समस्या को उजागर किया हैं।

उसने गलत नहीं कथा था :

कहानी का नायक शैल, अनी से प्रेम करता हैं। वह उसे बहुत चाहता हैं। प्रेम का अभाव उसे कब से खल रहा थं। एक साथी की प्रतिक्षा उसे थी उसकी कल्पनाओं में साथी का चित्र बड़ा सुंदर था। अनी में वह सब सुंदरता हीं थी, फिर भी वह उससे प्यार करता हैं। लेकिन उसका प्यार सफल नहीं होता। अनी की शादी किसी और से होती हैं। दो वर्ष बाद जब वह कनॉट प्लेस में अनी को उसके पति के साथ देखता है तो उसे लगता है – "क्षितिजा ने ठीक ही कहा थं – वह मुर्ख ही था। गलत नहीं थं। कुछ उसमें जो कांच की, चकम का मूल्य हीरे की आभा से अधिक आंके, उसके सम्मुख रत्नों की प्रदर्शनी मूर्खता नहीं तो और क्या हैं? जो लड़की पतिरुप में एक बड़े सेठ के सबसे बदसूरत और निख्टटू बेटे को पाकर संतुष्ठ थी, उसे यदि कोई इन्टरमेवज्चुअल अपनी जीवन संगिनी के रुप में पाना चाहे तो उसे क्या कहा जाएगा?"16

लेखक ने बताया है कि नारी प्यार में भी व्यवहार जताती हैं। पैसों के कारण वह बदसूरत और निखट्टू बेटे को भी अपना पति मानती हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने प्रेम की समस्या को चित्रित किया हैं।

संगिनी :

यह एक प्रेम कथा है। लेकिन यह कोई गम्भीर प्रेम कहानी नहीं हैं। कहानी का नायक नायिका से बहुत प्यात करता हैं। वे दोनों एकं–दूसरें के बिना जी नहीं सकते थें। लेकिन इनके प्यार के बीच समाज आ गया। उन दोनों को अपने प्यार की कुर्बानी देनी पड़ी। उन दानों ने जीवन में सबकुछ पाकर भी खो दिया थं। वे असफल हो गए थें। नायक ने अपने पिताजी के कहने पर दूसरी शादी की थी, पर वहा भी वह प्रसनन नहीं था। उसकी पत्नी उसे पिक्चर ले जाने के लिए जिद करती हैं लेकिन वह उसे, ले जाने के बजाय कहता है – "अच्छा तो जाओं भाड् में।" "मैं तो नहीं जा रहा। तुम्हें जाना हे तो जाओ।"17 कहानीके माध्यम से लेखक ने टूटते हुए प्रेम की समस्या को चित्रित किया हैं।

अन्य लोग भी :

आज–कल लड़के–लड़कियाँ प्रेम तो करते है पर उनमें आत्मविश्वास कम है। कहानी

नायक क्षितिजा से प्रेम करता है, उसे मन-ही-मन चाहता है, पर वह क्षितिजा के सामने प्यार का प्रस्ताव करने से ड़रता हैं। उसमें आत्मविश्वास की कमीं हैं। और जब उन दोनों का विवाह होता है तो घरवालो से नायक घबराता हैं। लेकिन घरवाले इस बात को स्विकार करते हैं। अपने बहू को घर में लाने की स्विकृति देते है तो वह प्रसन्न होता हैं। लेखक ने इस कहानी में दो प्रमियों के बीच उत्पन्न होनेवाली समस्या को उभारा हैं।

विरोध :

कहानी की नायिका रीमा नायक से प्रेम तो करती हैं। लेकिन समाज से ड़रती हैं। उसमें आत्मविश्वास नहीं हैं। नायक उससे प्रेम करता हैं। पर उसके प्रेम पर रीमा को विश्वास नहीं हैं। नायक उसकी हर एक बात मानता हैं, पर उसे इस बात का यकिन नहीं हैं। दानों मिलकर जब घूमने जाते है तो रास्ते में प्रवाल उन्हें देखता हैं रीमा बहुत ही घबराती है वह सोचती है कि, अब अपने प्यार की चर्चा सभी लोग करेंगे। वह डरती हैं। वह नायक को फिर कभीन मिलने का वादा करती है, पर नायक को यह बात अच्छी नहीं लगतीं वह कहता है, "अभी तो मेरे लिए क्या कुछ करने को तेयार थे और अब....।"18 कहानी में नायिका के कमजोरी के कारण उत्पन्न होनेवाले समस्या को लेखक ने बड़े खुबसुरती से प्रकट किया हैं।

परिणति :

इस कहानी का नायक अमिताभ है और नायिका अनुराधं। अनुराधा अमिताभ से बहुत प्यार करती हैं। उसने उपहार में दी हुयी साड़ी अपने बहन क जिद करने पर भी उसे नहीं देतीं। यहीं खिलंदड़ा रोमानी युवकदायित्वों को संभालने के क्रम में पारिवारिक ताने-बाने से बने विविध सुत्रों के माध्यम से जीवन की विविध विसंगतियों, विद्रूपताओं और परिणतियों के रु-ब-रु आता है जीवन के रोमांस की परिणति यथार्थ में होती हैं। रोमानी आवेश में प्रेमी की सामान्य सी भेंट मे फेरे लेनेवाली लड़की बच्चे के मल को पोंछने के लिए सबसे ज्यादा पुरानी साड़ी उसे ही पाती है।" अनुराधा ने कपड़ो को उलटा-पलटा, उपर-उपर ज्यादातर उसकी शादी की रेशमी साडियां थी। उन्हें निकाल-निकालकर वह बर्थ पर ढेर लगाती गई और फिर उसने नीचे से एक लाल बार्डर वाली सफेद साड़ी निकाली। उसे उलट-पलटकर देखा और बोली "यहीं ठीक रहेंगी।"19

यथार्थ के आगे रोमांस किस सहज ढंग से दम तोड़ता है, इसकी अभिव्यक्ति लेखक ने इस कहानी में खुबसूरती से की हैं।

3) पारिवारिक समस्याएँ :

परिवार समाज की एक ऐसी संस्था है जिसे मानव के आत्मसंरक्षण, वंशवर्धन और जातीय जीवन के विकास का हेतु कहा जाता हैं। "भारतीय संस्कृति में परिवार के इसी विषद दृष्टिकोण को चरितार्थ करते हुए "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना को प्रश्रय दिया हैं। परिवार भावना का साहित्य संसार से घनिष्ट सम्बन्ध हैं।"20 समाज में परिवार का अनन्य साधारण महत्व हैं। समाज का निर्माण ही परिवारों से होता हैं। पहले जमाने में संयुक्त परिवार दिखायी देता थं। जिसमें परिवार के सभी सदस्य इकठ्ठा रहते थें। परिवार प्रमुख के हाथ में सम्पूर्ण परिवार की बागडौर रहती थीं। आज आधुनिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। और समाज में जादातर विभक्त परिवार ही दिखाई दे रहे हैं। जिसमें सिर्फ पति-पत्नी और बच्चे रहते हैं। इससे उत्पन्न समस्याओं को नरेन्द्र कोहली ने अपने साहित्य में चित्रित करने का प्रयास किया हैं।

"पुरुष और नारी के पारस्पारिक सम्बन्धो में पति-पत्नी सम्बन्ध सर्वाधिक स्पृहणीय एवं आदर्श माना गयाहैं।"21 आदिकाल से ही स्त्री और पुरुष से पारस्पारिक आकर्षण का अनुभव किया हैं। और प्रायः सभी सभ्य समाजो में, उन्होंने इसे विवाह के रुप में स्थायित्व प्रदान किया हैं। सुखी और परितृप्त गृहस्थ-जीवन समस्त सुखों का मूल हैं। तथा संतोषपूर्ण गृहस्थी जीवन-यात्रा को आनंददायक बना देती हैं। पति उपार्जन करता है और पत्नी गृह-प्रबंध करती है, इस प्रकार दानों एक दूसरें के सच्चे मित्र एवं पूरक होते हैं।

हमारे प्राचीन धर्म-ग्रंथो में पत्नी को भार्या, गृहलक्ष्मी, गृहिणी, अर्धांगीनी संसार यात्रा की एक मित्र आदि नामों से अभिहित कर पत्नी पद को गोरवपूर्ण माना गया किन्तु विभिन्न धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के कारण गृह और परिवार के बीच प्रस्फुटित होनेवाला नारी रुप क्षणै-क्षणै तुत्प हो गया। नारी गृह की बंदिनी, पुरुष की अश्रिता, आत्मसम्मान तथा स्वतंत्र व्यक्तित्व से शून्य एवं पुरुषसे हीन समझी जाने लगीं।

मम्मी, पापा और बेबी :

एक ही परिवार में रहते हुए भी लागों में मतभेद होते हैं। इस कहानी का नायक ओर नायिका इन दानों में अपने बेबी को लेकर हमेशा मतभेद होते हैं। जब बेबी कोई अच्छा काम करती है तो वे दोनों भी उसका श्रेय अपनी ओर लेना चाहते हैं ओर कोई बुरा काम करे तो पति अपने पत्नी को ही उसका पूरा जिम्मेदार ठहराता हैं। बेटी जब डिवेट में प्राइज जीतकर आती है तो उसके हाथों में कप देखकर माताजी को बहुत खुशी होती हैं वह उसे अपने पति

के पास ले जाती है – "देखो जी। सवेरे से मेरी बेटी को बुरा–भला कह रहे थे। देखो, मेरी बेटी कप जीतकर लायी है डिबेट में।"32 उसके पापा गुस्सा थुँकते है और कहते है – क्यो नहीं जीतेगी कप? आखिर मेरी ही तो बेटी हैं। तुम्हारे गुण लेती तो आलू के बोरे के समान घरमें पड़ी होती। किसी पुरुष से बात भी करनी पड़ती तो शर्म से लाल मिर्च हो जाती।" वस्तुतः उन दानों मे मतभेद होते हैं।

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से मानव के अहंकार को स्पष्ट किया हैं। साथ ही परिवार में उत्पन्न होनेवाले समस्या को चित्रित किया हैं।

बदतमीजी :

कहानी नायक को उसके छोटे भाई बहन उल्लू बनाते है। हमेशा उसे तंग करते हैं। सब भाई–बहन उनकी आदन पर खूप हँसते हें। उनके पीठ फेरते ही, जेबसे अपना रुमाल निकालकर मुख साफ करने लगते हैं। बच्चों ने "रुमाल" शब्द उनका सांकेतिक नाम रखा था। भैया भी हमेशा स्टेंडर्ड रुमाल साथ रखा करते थे। वे इन लोगों के रुमाल को देखकर खिल्ली उड़ाते हुए कहते है – "चले हैं रुमाल रखने। अरे भाई, चीज़ रखनी है तो ढंग की रखो। आदमी का आखिर कोई स्टैंडर्ड होना चाहिए।"23 इस तरह वे भी बच्चो की खिल्ली उड़ाते। भैय्या ने उनके शादी के लिए कुछ नये रुमाल बनवा लाए थे, शादी के दिन वे रुमाल नहीं मिल रहे थे तो वे बहुत नाराज थें। शादी के बाद जब वे अपने पत्नी के साथ कहीं बाहर चले जाते तो भी वह रुमाल उनके साथ होता। भाभी ने शादी में जो रुमाल उन्हें तोहफे के रुप में दिए थे वे रुमाल वे नहीं लेते थे तो भाभी में और भैया में झगड़े होते थे। इस प्रकार लेखक ने इस कहानी के माध्यम से छोटी सी बात के कारण परिवार में किस तरह तनाव बढ़ जाता है, इसका चित्रण किया हैं।

कहानी की अभाव :

"कहानी का अभाव" कहानी की विधा संबंधी पूर्व–मान्यताओं को सशक्त चुनौती देती हें। यह कहानी बदलते मिजाज को अत्याधिक खूबसूरती से अभिव्यक्ति देती हैं। यह कहानी लेखक के आरम्भिक कहानियों मे से है, उन्हें यह कहानी बहुत ही प्रिय हैं। इसकी सामग्री उन्होंने अपने बड़े भाई के जीवन से ली थी, जो अत्यन्त नीरस, तथा मशीनी हो चुका था। उनकी पीड़ा लेखक के लिए महत्वपूण्र हैं। यह कहानी की संरचना के परम्परागत अकादमीय ढांचे पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती हैं। उनके जीवन पर कहानी लिखने को कोई भी बिन्दू उन्हें नहीं मिला इस कहानी में लेखक ने पारिवारिक समस्या को चित्रित किया हैं।

लोगों के बच्चे :

यह कहानी मॉ बाप के उस मानसिकता की दयोतक है जिसमें अपने बच्चें गुणशून्य और दूसरों के बच्चे गुणों की गांठ। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने नारी की अहम् भावना को स्पष्ट किया हैं। आज नारी समाज के सभी नियमों को ठूकराकर आगे बढ़ रही हैं। उसे अपने बच्चों का भी खयाल नहीं है वह बच्चों के पढ़ाई की ओर भी ध्यान नहीं देता। उसे रसोई तक के भी काम करने को कहती हैं। बच्चें के भविष्य की चिंता उसे नहीं हैं। वह अपने बच्चे से कहती है – "पास बैठे रहते हो, इतना भी नहीं देख सकते कि, चूल्हे पर कया – पक – सड़ रहा है।"24

इस परिवार में नारी अपनी अलग पहचान बताती हैं। अपने बच्चे को उन्नती के राहपर चलाने के बजाय वह उसे बवनति के राह पर घसिठती हैं। उसके पथ की बाधा बनती हैं।

दृष्टीदेश में एकाएक :

कहानी का नायक अपने आंखों के बिमारी के कारण उदास हैं। उसके आंखों के कुकरे अकसर फूल जाया करते थें। वह अपनी आंखोव्दारा दुनिया के किसी भी चीज को नहीं देख सकता था। उसके आंखो के बहुत सारे इलाज करवाते है, लेकिन हर इलाज असफल होता हैं। दिन–ब–दिन अपने आप को सता हैं। वह सोचता है कि, परिवार की उन्नति उसके कारण ही नहीं हो रहीं। वह अपने–आपको बच्चों के उन्नती के पथ की बाधा समझता हैं। आखिर अपनी नियति मानकर वह जिन्दगी से समझौता करता हैं। पर एक दिन गिरीश अपने मित्र डॉक्टर कयश्प व्दारा उनके आंखो का इलाज करवाता हैं। फिर भी पिताजी अपने बेटे के प्रति कृतज्ञ इसलिए नहीं हो पाते क्योंकि बेटे के प्रयास से पिता को धुंधली दृष्टि के स्थान पर स्पष्ट दृष्टि तो मिली किन्तु इससे उजागर क्या हुआ उनकी हीनता, कुंठा और चुक गये होने का अहसास। वे सोचते है "अब मिली हैं मुझे आंखे जब मैं साठ साल का हो चुका हूँ। अब जब कि, मैं फिर से स्कूल नहीं जा सकता। नौकरी नहीं कर सकता। जब मेरे बच्चे भी अपनी जिन्दगी में इतना आगे तक चल चुके है उन्हें न अब मैं पढ़ा सकता हूँ, न लिखा सकता हूँ। अब जब कि धक्के–मुक्के से वे जो कुछ बनना था, बन चुके है। अब यदि आंखे नही मिलती तो क्या बिगड़ जाता। अब कौन–सा सवाल हल न कर सकने के कारण कोई पीटेगा मुझ।... अब क्या करेगा इन आंखो का।"25

शटल :

आज संयुक्त परिवार लगभग टूट गए हैं और युवा पीढ़ी निरन्तर आत्मकेन्द्रित होती जा रही हैं। ऐसे में अपनी ही संतान में माता-पिता "शटल" होकर रह जाते हैं। "शटल" कहानी आज के व्यष्टि - केन्द्रित जीवन में अभिभावको के फालतू हो जाने का सशक्त चित्रण करने के साथ ही आत्मरत संतान के व्दारा माता-पिताको भावात्मक स्तर पर शोषित करती पीढ़ी के मौका परास्त चरित्र को भी अत्याधिक खूबी से उभारती हैं। पहली स्थिति में अभिभावक या तो फालतू जीव होकर विवशता की नियति झेलता है या मनुष्य से पतित पशु बनकर रहा जाता हैं। "घर के किसी पालतू जानवर की तरह उसे ठीक समय पर खाना मिलता रहा है ओर बस।"26 अन्य स्थिति में यह कहानी आज की प्रेम केन्द्रित उस व्यवस्था को सामने लाती है जब अवसरवादी संतान के हाथों अपने ही मां-बाप शोषण के उपकरण होकर रह जाते हैं।

बला :

बच्चों की देखभाल करना, उसे बड़ा करना यह जिम्मेदारी सिर्फ स्त्री की ही है ऐसा पुरुष मानते हैं। बच्चों को संभालना तो दूर, उसके रोने के आवाज से तंग आकर पीयूष अपनी पत्नी केशा को मायके चले जाने के लिए बाध्य करता हैं। बड़े घर के या अमीर दामाद का ढंग कुछ अलग ही होता हैं। पीयूष चाहते हुए भी अकेला घर में नहीं रह सकता। एक ओर घर में अपनी पत्नी और मुन्ना उसे बला के समान लगते है और उन्हें मायके भेजने के बाद भी उसका अकेले में जी नहीं लगता फिर वह उस बला को वापस लेकर आता हैं। अपने ही परिवार के लोगों को वह बला समझने लगता हैं। लेखक ने इस कहानी में प्रमुख रुप से पारिवारिक समस्या को उद्धृत किया हैं।

नमक का कैदी :

नमक हमे मामूली स्त्री चीज लगती है, लेकिन मनुष्य के जीवन में नमक का होना अनिवार्य है। नमक न हो तो पूरे जीवन का मिठास पन ही नष्ट होता हैं। इस कहानी के नायक को साँस की तकलिफ है इसके वजह से डाक्टर उसे नमकिन चीजे तथा सिगरेट पीने से मना करते हैं। इस साहब के जीवन में इन दो चिजों को इतना महतव है कि, इसके बिना जीना मुश्किल हैं। डाक्टर के मतानुसारनमक इनके लिए जहर है लेकिन वो फिर भी नहीं मानते। बहू-बेटे उन्हें नमकी न चिजें नहीं देते, फिर भी वे अपने पोते से चोरी-छुपे नमक लेकर ही भोजन करते हैं। और सिगरेट भी पीते हैं। और सिगरेट देने के लिए बहु

को जिम्मेदार ठहराते हैं। बहु बेचारी बिल्कुल बेकसूर हैं। बहू और बेटों में इसलिए झेगड़ा शुरु होता है और ये महाशय खुशी मानते हैं। लेखक ने इस कहानी में मुख्य रुप से मनुष्य की मनोदशा का चित्रण बहुत खूबसूरती से खिंचा हैं। साथ ही लेखक ने स्पष्ट किया है कि, मामूली सी चीज को लेकर भी परिवार में किस तरह समस्या उत्पन्न होते हैं।

4) आर्थिक समस्या :

जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान "अर्थ" को है। प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक जीवन आर्थिक मूल्यों से प्रभावित रहा हैं। आर्थिक मूल्योंपर ही समाज का विकास आधारित हैं। सामाजिक परिपार्श्व में विभिन्न विषमताओं का कारण यहीं मूलय हैं। विभिन्न सामाजिक संघर्ष प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रुप में आर्थिक वैषम्य से ही सम्बन्ध रखते हैं। आर्थिक वैषम्य से ही वर्ग भावना का उदय होता हैं। आजकल धन ही जीवन का मानदण्ड बना हैं। स्त्री पुरुष, पति-पत्नी, पिता-पुत्र के संबन्धो में अर्थदृष्टि ने एक नया मान खड़ा कर दिया हैं। पैसे के सामने सारे रिश्ते-नाते झूठे नजर आते हैं।

आज अर्थपर आधारित समाज की संरचना बन गयी हैं। किसी भी समाज का परिदृश्य मुख्यतः आर्थिक कारणसे ही संचलित होता है। अर्थ और अर्थ व्यवस्था आज वह घूरी बन गयी हैं। जिसके व्दारा समाज के व्यवहार सम्बन्ध रिश्ते आदि सभी कुछ निर्धारित होते हैं। अर्थ के कारण ही समाज में तीन वर्ग बन गये हैं। उच्चवर्ग, मध्यवर्ग, निम्नवर्ग। आधुनिक युग में कुछ लेखकों ने आर्थिक समस्या को केन्द्र बिन्दु मानकर लेखन किया हैं। आर्थिक समस्या के अन्तर्गत निमनवर्ग की मध्यवर्ग की उच्चवर्ग की आर्थिक स्थिति को किया जात हैं। उसके साथ-साथ बेकारी की समस्या, गरीबी आदि का अन्तर्भाव होता हैं। अर्थार्जन की समस्या, आर्थिक विषमता के कारण वर्ग भेद की समस्या, अर्थ लोलुपता की समस्या इसके उपभेद है। कोहली ने वर्तमान जीवन की आर्थिक समस्या को बहुत-सी कहानियों में अंकित किया हैं।

दो-ढाई और आठ :

कहानी की नायिका कांति नौकरी करती हैं। वह हर महिने घर में पैसे लाती है। लेकिन फिर भी वह सूखी नहीं हैं। उसका भैया गरीब हैं। उसे भी अर्थ के कारण अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। कांति के सभी पैसे घर की चीजें लाने में ही खर्च होती हैं फिर भी उसकी भाभी उसे पैसों का हिसाब माँगती हैं। अर्थ के कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पडता हैं।

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है कि मनुष्य की आर्थिक स्थिति दिन-ब-दिन घटती जा रही हैं। आर्थिक तनाव निर्माण होने के कारण उसका जीवन खतरें में हैं। इस बात को लेखक ने बड़े सुंदरता से प्रकट किया हैं।

सहारा :

कहानी के नायक का नाम प्रवाल हैं। वह अपना विशिष्ठ स्थान बनाना चाहता हैं। वह एम्.ए. की शिक्षा प्राप्त करने के लिए इलाहाबाद जाना चाहता हैं। लेकिन उसकी आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर हैं। अर्थ के अभाव के कारण उसे पिताजी इलाहाबाद जाने के रोकते हैं। प्रवाल स्वावलंबी युवक है वह इलाहाबाद में टयूशन लेकर पढ़ाई जारी रखने का प्रबन्ध करता हैं। इस काम में वह घरवालों का सहारा लेना चाहता हैं। उसे किसी का सहारा नहीं मिलता तो वह कहता है - "मत दीजिए एक पैसा भी आप।" वह बिना किसी संकोच के कह गया, "मै कोई-न-कोई प्रबंध कर ही लूँगा।"27

अंत में उसे भैया का सहारा मिलता हैं। वे उसे कुछ पैसे देते हैं और हर महिने कुछ तो पैसे भेजने का वादा करते हैं। भैया का सहारा सचमुच अनमोल था। अगर भैया वे पैसे नहीं दिए होते तो उसकी महत्वाकांक्षा चूर-चूर हो जातीं। लेखक ने इस कहानी में यह स्पष्ट किया है कि, आज समाजमें बहुत सारे युवक है जो पढ़ना-लिखना चाहते हे, पर अर्थ के कारण वे अपनी इच्छओं को व्यक्त नहीं करते। आर्थिक समस्या उन्हें घेरी रहती हैं।

संतुलन :

परिमल और सुनीति दोनों पति-पत्नी हैं। वे अपने मासिक आय में घट-गृहस्थी चलना नहीं पाते, जिसके कारण दोनों में हमेशा अनवन रहती हैं।" सुनिति स्वयं नौकरी करके आर्थिक रुप में स्वातंत्र्य पाने के कारण मनमाने ढंग से बर्ताव करना चाहती हैं। सुनिति ओर परिमल दोनों पढ़े लिखे होने के बावजूद भी एक दूसरे को ठीक तरह से समझ नहीं पोत और न ही उमने समझौता करने की प्रवृत्ती हैं। घर-गृहस्थी का खर्चा चलनो के लिए उन दोनों को ओवर-टाईम करना पड़ता हैं। लेखक ने इस कहानी में मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन की समस्या को उभारा हैं। यह समस्या अर्थ के कारण उत्पन्न हुई हैं।

खर्च, डायरी और अस्पताल :

कहानी में बहू को अपनी मासिक आय में पूरे घर-गृहस्थी का बोझा ढोना पड़ता हैं। उसे अपने लिए एक वेणी लेना भी मुश्लील होता हैं। पैसों की बचत करने के लिए अपनी छोटी-छोओी खुशीयों का गला घोंटना पड़ता हैं। शादी के पहले ससूरजी ने दिए आश्वासन

"बहू नौकरी नहीं करेगी" यह आश्वासन आखिरतक आश्वासन ही रह जाता है। स्त्रीयों के बारें में उनके जो आदर्श पूर्ण वक्तव्य है वो सिर्फ कहने को ही अच्छे लगते है। जिंदगी मे प्रत्यक्ष रुप मं लाने के लिए नहीं। सभी चिजों का बढ़ना दाम देखकर पिताजी को लगता हे कि, अपनी बेटी मैंने न आये, क्योंकि उसके आ जाने के कारण घर का खर्चा और बढ़ जाएगा। पिताजी को बिमारी हे लेकिन डाक्टर को पैसे देना पडेंगे इस वजह से "पिताजी अपना दर्द बेटेको नहीं बताते। हररोज का बढता हुआ बजट देखकर और चिन्ता से हार्ट अँटैक हो जाता हैं। इस प्रकार भयानक रुप से बढ़ती हुई मँहगाई के कारण सामान्य मनुष्य को हार्ट फेल ही हो जायेगा।

इस कहानी मे लेखकने आर्थिक समस्या के साथ-साथ महंगाई के बिच पिसता हुआ मध्यम वग्र का सजिव चित्रण बहुत ही मार्मिक ढंग से किया हैं। यह कहानी इस पीढी की इच्छओं और विवशताओ को मनोवैज्ञानिक थरातल से प्रस्तुत करती हैं। असुरक्षा और अभाव व्यक्ति को हिसाबी-किताबी बना देते हैं। और इस हिसाब-किताब का निरन्तर तनाव व्यक्ति को आक्रान्त किए रहता हैं। जो दिल के दौरों अथवा किसी अन्य मानसिक असंतुलन के रुप में व्यक्त होता हैं।

चुभन :

कहानी मे मां और बेआ दोनो में अर्थ ले कारण मतभेद निर्माण होते है। अर्थ की कमी होने के कारण बेटा अपने मां को पहनने के लिए जंपर भी नहीं ला सकता। कुछ लोग उनके घर आकर महात्मा गांधी और जवहरलाल नेहरु का चर्खेवाला झेंडा उन्हें घर पर फहराने के लिए देते हैं। मां इस झंडे को देखकर मन ही मन खुश होती हैं। वह इसका जंपर बनाने की तरकीब सोचती हैं। उसके घर में बहुत सी चिजों की कमी हैं। बेटे के कहने पर वह जंपर भी नहीं बनाती और रोटियां लपेटने के लिए कपड़ा भी। वह उसका थैला बनाती है। जो उसके बेटे को सब्जी लाने के लिए काम आ सकें। "एक बार वह थैला बना दे तो सब्जी लाने के लिए जाते हुए जगदीश उससे रोज लड़ाई भी नहीं करेगा।"28

इस कहानी में लेखक ने अर्थ के कारण उत्पन्न समस्या को बड़े सुंदरता से चित्रित किया हैं। आज अर्थ पर आधारित समाज की संरचना बन गयी हैं। इसके कारण मानव अपने आप को कोसता जा रहा हैं। वह समाज की संरचना को भूल रहा हैं। आधुनिक युग में आर्थिक समस्या और भी बढ़ती जा रही हैं।

निर्णय :

अमीर लोग गरीब लोगों को किस प्रकार धोखा देते है, इसका भी चित्रण बीच-बीच में किया गया हैं। पानसिंह और गौरी दानों पति-पत्नी हैं। पानसिंह शहर के किसी हिस्से में खाना पकाने का काम करता हैं। उसके मालकिन व्दारा कहनेपर वह गौरी के लेकर शहर आता हैं। तो वो लोग उसे कुछ कहे बिना उसके आने के पहले ही मकान छोड़कर चले जाते हैं। पानसिंह से सामने बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो जाती हैं। वह अपने पतनी के साथ इतने बड़े शहर में कहा रहेगा? वह अपने मित्र जगतराम के घर एक रात काटता हैं। वहां भी वह जगतराम के पत्नीव्दारा अपमानित होता हैं। दुसरे दिन गौर को किसी मेमसाहब के यहाँ कामपर लगवाता है, और अपने लिए नौकरी ढुंढता हैं। एक साहब के घर सुबह होते ही नौकरी के तलाश में जाता है वह साहब भी अपमानित करते हुए कहते है - "तूम रात को हमारे बरामदे में तो नहीं सोये थे कि दरवाजा खुलते ही हाजिर।"29 उस साहब के घर उसे नौकरी मिल सकती थी। पर साहब की शर्त थी, अगर उसने अच्छा खाना बनाया तो वह पहलेवाले नौकर को निकालकर उसे कामपर रखवाना चाहता था। पानसिंह को बहुत बुरा लगा वह अपने लिए किसी गरीब को भूखा नहीं देख सकता था। थोड़ी देर के लिए वह सोचता है कि, यह नौकरी नहीं करुँगा। लेकिन उसे भी कहां नौकरी नहीं मिलती। "वह धीरे-धीरे एक निर्णय पर पहुंच रहा था। निर्णय से उसकी अंतड़ियों में जलन होने लगी। किन्तु वह कर भी क्या सकता था। उसे पता ही नहीं चला कि अंतडियों की जलन से कहा उसकी आंखे भीग गयी थीं।...."30 वह जेसे समाधि से जगा। उसने आस्तीन से आंख सुखायी मुंह में जमा हो गयी। कड़वी-सी थूक गटकी। स्वयं को सेकझोरा और बड़ी अवशं-सी स्थिति मे उसके पैर "ईब्लक" की ओर उठ गये।

5) पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या :

विवाह एक सामाजिक बन्धन होता हैं। जिसमें दो शरीरों का ही नहीं दो मनों का मिलन होता हैं। विवाह समाज के स्वास्थय के लिए अनिवार्य हैं। किन्तु इसमें अनगिनत समस्याएँ दिखाई देती हैं। पति-पत्नी के बीच विश्वास महत्वपूर्ण होता हैं। थोडासा भी शक दाम्पत्य जीवन को तोड़े सकता हैं। आधुनिक युग में दाम्पतय जीवन में अधिक टकराव नजर आता हैं। दाम्पत्य जीवन की पहली शर्त समझौता मानी जाती हैं। समझौता अगर नहीं हो सका तो दाम्पत्य जीवन तनाव के घेरे में आ जाता हैं। इसी दाम्पत्य जीवन की समस्या परनरेन्द्र कोहली ने लेखनी चलायी हैं।

आज का दाम्पत्य जीवन कुंठित एवं कलहपूर्ण हैं। उनमें प्रथम वे दम्पति आते है; जिसमें पत्नियाँ पढ़ी लिखी एवं समृध्द परिवारों से सम्बन्ध होती हैं। वे पति के घ्र आनेपर पति एवं ससुराल पक्ष के प्रत्येक सदस्य को हीन दृष्टि से देखती है, जिसके कारण पति-पत्नी में मतभेद एवं तनाव की स्थिति उत्पन्न होती हैं। जिन स्त्रियों का विवाह उनके माता-पिता उनके इच्छा के विरुध्द किसी से करवाते है तो ऐसे समय भी समस्या उभरती हैं।

पूर्णता :

कहानी का नायक अपने माता के इच्छा के विरुध्द अपने मामा की लड़की राधं से विवाह करता हैं। राधा हमेशा बिमार रहती है इसलिए उसकी माँ इस विवाह को विरोध करती हैं। आने पुत्र के जिदे के आगे वह हारती है। वह अपने पुत्र का भी त्याग करती है, पर जब पोता होता है तो वहपुत्र के पास चली आती है। पोते का नाम गौतम रखा जाता हैं। गौतम अपहित हैं। राधा अपने-आप को कोसती हें। वह समझती है कि, मेरे कारण बेटा अपाहिज हुआ हैं। राधा का ओर उसके पति का बहुत ही समीप का रिश्ता था। ओर प्रकृति रिश्तेदारों में रक्त-संबंध नहीं देखना चाहतीं। नायक राधा को दु:खी नहीं देखना चाहता। वह अब कभी भी पिता नहीं बननेवाला था क्योंकि, उसने अपना ऑपरेशन करवाया था। फिर भी उसे अपने पत्नी का प्यार नहीं मिलता वह दुनिया छोड़कर चली आती हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से सीख दी है कि, समीपी रिश्तेदारों में रक्त-संबंध नहीं रखना चाहिए, इसके कारण बच्चे अपहिज पैदा होते हैं।

काठ :

कहानी की नायिका लीला अपने पति सुधीर पर बहुत ही रोष जमाती हैं। वह घर में साफ-सफाई करती हैं। अगर पतिव्दारा घर में कुछ गंदगी फैले तो वह उसपर गुस्सा हो जाती हैं। पति भी उससे घबराता हैं। अगर पति वैसे ही गंधे पांव लेकर घर घुस आये तो वह पति से कहती है - "दीखता नहीं है तुम्हे?" लीला की कुछ अतिरिक्त कर्कश आवाज उसके कानों में पड़ी, "पेर जरा पोंछकर आते। पायदान क्या संघने के लिए है? सारा धुला-धुलाया फर्श गन्दा कर दिया।"31 सुधीर को लीला के मुख से इस तरह की बात सुनकर बहुत ही गुस्सा आता है। अंत में वह लीला से बहुत ही डरने लगता हैं। वह घ्र में भी जल्दी आता नहीं। रात के समय भी जब उसे लगता है कि, अब लीला सो गई होगी तो वह घर की ओर जाने के लिए मुड़ता हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से नारी के अहंकार पर प्रकाश डाला हें। नारी अपने पति को अच्छी तरह समझ नहीं पातीं। इसके कारणं आज समाज में पति-पत्नी संबंध बिगड़ रहे हैं।

वापसी :

सरला और राजन दोनों पति–पत्नी हैं। सरला किसी दफतर में नौकरी करती हैं। राजन को दौरे की बिमारी हैं। वह घर में ही पड़ा रहता हैं। सरला नौकरी से परेशान होकर आती और आने के बाद राजन के सेवा में मग्न होतीं। कुद दिन बाद सरला के प्यार भरे बर्ताव से राजन अच्छा होता हैं। वह नौकरी करने लगता हैं। अपना तनख्वाह वह अपने ही उपर खर्च करता हैं। सरला चाहती है कि, कुछ पेसे वह गृहस्थी के लिए भी खर्च करे पर राजन की आदत नहीं जाती। सरला तंग आती है ओर कहती है – "तुम गर्म सूट पहनकर मज़े से पाइप में इम्पोर्टेड़ तम्बाकू पियो ओर मुझको और बच्चों को भट्ठी मे झोंक दों। तुम यह कयों नहीं सोचते कि, धर का खर्च कैसे चलेगा।"32

इस बात से राजन नाराज होता है। उसे मन में बेचैनी जागती हैं। उसे अपना पहला जीवन (बीमारीका) ही अच्छा लगता हैं। लेखक ने इस कहानी में यह बताया है कि, पति–पत्नी दानों एक दूसरें को न समझने के कारण उनमें समस्या निर्माण होते हैं।

वेश्या का नौकर :

कहानी का नायक बूटाराम अपनी पत्नी जिन्दों के साथ तंदूर चलाता हैं। तंदूर में बहुत सारे लोग आते है। तंदूर अच्छा खास ढाबा बन जाता हैं। एक बार ड्राइवर संतोखसिंह ने ठिठोली की थी, " तेरा होटल तो बड़े–बड़े होटलों को मात कर रहा है, बूटे। कनार प्लेस के भी किसी होटल में अभी तीवीं मनजर नहीं आई।"33 इस बात से बूटाराम को बहुत बुरा लगता है। इसके कारण वह अपने पत्नी पर शक करने लगता हें। वह तो मनीजर बना बैठी थीं। वह सोचता है कि, "जिसकी मालकिन के अनेक पति है। पर इतने पति कैसे हो सकते हैं, इते तो चार ही हो सकते हैं। तो वह एक वेश्या का नौकर हैं।"34 बूटाराम को स्वयं ही ग्लानि होने लगती हैं। पति–पत्नी का एक दूसरे के प्रति अविश्वास होने के कारण आज कई परिवारों में पति–पत्नी संबंध बिगड़ रहे हैं। पुरुष के लिए स्त्री का आर्थिक रुप से सहयोगी होना तो काम्य है पर अहं के स्तर पर स्वीकार्य नहीं।

पालतू कबूतर :

कहानी का नायक अपने पत्नी के बर्ताव से तंग आकर वह मायके कब जाती है इसकी ताक में ही रहता हैं। पत्नी को मायके भेजकर अकेले को दुनिया बड़ी रोमानी लगने लगती हैं। एक ओर पत्नी से तंग आकर उसे मायके भेजता है तो दूसरी ओर अकेलेपन को भी सह नहीं सकता। पत्नी के मायके जाने के बाद क्या–क्या करना है, किस तरह मजे

लुटने है इसक मन-ही-मन अंदाज बांधता हे लेकिन प्रत्यक्ष रुप में कुछ भी नहीं कर पाता। इस तरह की व्दिधा मनःस्थीति में फँसे हुए पति का बहुत ही अच्छा चित्र इस कहानी में खिंचा हैं।

निचले फलैट में :

कहानी के शुरुआत में पति-पत्नी में टकराव नजर आता हैं। दाम्पत्य जीवन की पहली शर्त समझौता मानी जाती है। समझौता अगर नहीं हो तो उनमें दरार निर्माण होती हैं। लेखक ने समाज में बढ़ती हुई अमानवीयता के स्पष्ट चित्र खिंचें हैं। दूसरे मनुष्य की उपस्थिति होते हुए भी उसके न होने का अहसास देनेवाली यह कहानी हैं। "निचले फलैट में" चोर की आशंका से भयभीत पहले माले की पत्नी पति को जगाकर सुरक्षा का आश्वासन पाना चाहती है किन्तु पति सम्पूर्ण मूल्यों को ताक में रख अपने कुतर्को से पत्नी और स्वयं को प्रवंचित करता जिस आत्मरत दृष्टि को प्रस्तुत करता हैं। वह मनुष्य के अमानवीय हो जाने की उस नियति को सूचित करती हैं जिसकी विडम्बना का शिकार आज का मनुष्य हो रहा हैं। "ओर यदि...यदि" पत्नी का कंठ फिर से छिलने लगा, "उन्होंने मुझे छेडा?" एक क्ष्ण के लिए पति मौन रह् गया। "नही, तुम्हे नहीं छेडेंगे।" वह बहुत धीरे से बोला, "तुम अब उतनी जवान नहीं हों।"35

आज मनुष्य जिन संक्रान्त स्थितियों से गुजर रहा है, उनकी अपरिहार्यता के बावजूद उसकी चेष्टा यह होनी चाहिए थी कि, वह स्वस्थ मूल्यों के प्रति प्रयत्नशील होता परन्तु विडम्बना यह है कि, वह अपनी विघटनकारी स्थितियों को भी गौरवान्वित करने लगता है। मनुष्य के इस जड़ीभूत आचरण के कारण ही मनुष्यता के लिए चिन्ता पैदा होती हैं।

6) दिखावटीपन की समस्या :

उच्च वर्ग का अन्धानुकरण करने के प्रयास में मध्यवर्ग में दिखावटीपन की समस्या उभरी हैं। अपनी हैसियत से बढ-चढ़कर रहने के प्रयास में मध्यवर्गीय मनुष्य निरन्तर निराश होता जा रहा हैं। आर्थिक क्षमता न होते हुए उच्च वर्गीय सभ्यता को अपनाया जाता हैं। मेहमानों के सामने अपनी फटी-कंगाल अवस्था को छिपाने का दयनीय प्रयास कुछ लोग करते हैं। आजकल के खोखले दिखावटीपन को कोहली ने सूक्ष्मता से कछ कहानियो में चित्रित किया हैं।

मिल का मॉडल :

कहानी की नायिका एक नर्स हैं। वह एक मरीज की देखभाल करते-करते उसके

प्यार में फसती हैं। मरीज का नाम अश्विनी था। और नर्स का शील। वे दोनों एक दूसरे को बहुत चाहते हैं। लेकिन अश्विनी में दिखावटीपन बहुत हैं। वह यथार्थ को छिपाना चाहता हैं। नकली जीवन जीना चाहता हैं। ओर शील स्वाभाविक रुप में जीना चाहती हैं। अश्विनी जब पार्टी नें शील की पहचान करवाता है तो वह अउसका नर्स का पेशं छुपाता हैं। इस बात से शील नाराज होती हैं। वह जानती है कि, अश्विनी को दिखावटीपन अच्छा लगता हैं। जो कि शील को यह पसंद नहीं। वह कहती हैं – "मुझे लड़का नहीं आदमी चाहिए था, समझदार आदमी जो जीवन के यथार्थ को उसक`स्वाभविक रुप में स्वीकार कर सके।"36

सार्थकता :

कहानी की नायिका के असली बाल बहुत ही छोटे हैं। वह उसपर दिखावटी बाल लगाना चाहती हैं। जब वह अपने पति के साथ हजीमून की दसवीं एनिवर्सरी मनाने के लिए जाती है तो वहां से वह नकली बाल ले आती हैं। नकली बाल धोने के बाद उस`अपने पति के सामने ही सुखाने के लिए रखती हैं। पति को डर है कि, उसके बाल कहीं निचे की ओर गीर न जाए ताकि चौकीदार हर घर में जाकर पूछे, "मैने साहब, ये बाल आपके हैइ"37 लेखक ने इस कहानी के माध्यम से दिखावटीपन की समस्या को चित्रित किया हैं। मानव अपने असली रुप को छिपाता है और दिखावटी पन का बुरखा ओढ लेता हैं। अपनी हैसियत चढकर रहने के प्रयास में मध्यवर्गीय मनुष्य निरंन्तर निराश होता जा रहा हैं। वह अपनी फटी–कंगाल अवस्थापर दिखावटीपन का बुरखा चढ़ाता हैं। आजकल के खोखले दिखावटीपन को लेखकने इस कहानी में चित्रित किया हें।

पुराना दोस्त :

कहानी मे नायक ने अपने पुराने दोस्त के सामने अपनी असली अवस्था को छिपाने का प्रयास किया हैं। खोखले दिखावटीपन को इस कहानी के माध्यम से लेखक ने चित्रित किया हैं। नायक और राजेश दोनो मिलकर बैठे है लेकिन उनमें खामोश बादल का एक टूकड़ा छाया हैं। दोनों को भी नहीं सुझ रहा था कि वे एक–दूसरे को बातों में कहाँ छूए। गलत जगह निशाना लगाने के पहले ही वे दूर से ही असली स्थिति क्या है जानना चाहते थें। हर आदमी अपने छावों को इस प्रकार ढक–छिपाकर आता है कि, उसके किसी भाव का पता नहीं चलता। वह दिखावटी पन का बुरखा ओढलेता हैं। ऐसे में एक अनजान छुअन जानी–पहचानी चीख को जन्म देती हैं।

"कहां हो आजकल?" मैंने बड़ा अस्पष्ट-सा प्रश्न किया। "कालटेक्स की रसीदें काटते हैं, गुरु।" उसके मुख पर व्यावसायिक पीड़ा उभरी।"38

लेखक ने इस कहानी के माध्यमसे दिखावटी पन की समस्या को उभारा है। हर व्यक्ति अपने व्यवसाय की बात करते हुए पीड़ा से भर उठ़ता हैं। उसे उस पैरो की सारी बुराइयां रोज लगने वाले इंजेक्शन की तरह कोंचने लगती हैं। दूसरें पेशों की तकलीफों को न जानने के कारण उनमें पीड़ा उठ़ती हैं।

शवयात्रा :

कहानी में लेखक ने बताया है कि, सेठी का साला मर चुका हैं। और उसका गम तो किसी को भी नहीं। उपर से वे सिर्फ दिखावटीपन का प्रदर्शन कर रहे हैं। उसे नॅचरली मृत्यू आया है ओर उसके पित शक कर रहे है कि, उसे किसी ने शराब में विष दे दिया हैं। दुनिया में ऐसे भी लोग है जो सिर्फ व्यवहारिकता देखते हैं। सामने शव पड़ा है ओर वे अपना टाइम वेस्ट होने की बात कर रहे हैं। शवयात्रा चल रही है और वर्मा साहब एक कोकाकोका पीकर रिक्षासे उनके आगे चले जाते हैं। और कहते है - "पता नहीं लोग साले इतनी गर्मी में क्यो मरते हैं।"39 यहाँ लोगों के दिखावटीपन पर प्रकाश डाला गया हैं। साथ ही लेखक ने इस कहानी में चित्रित किया है कि, एक शरीफ और शानदार दिखाई देनेवाला डॉक्टर जल्लाद का काम भी कर सकता हैं।

सामने चिता जल रही है और सेठी वर्मासे कहता है - "सुनो। मेरी पतनी घर चली गयी है और चाबियां मेरे पास हैं। चिता के जलते ही तुम जल्दी से उसे ये चाबियां देने के लिए घर चले जाना।40 लेखक ने बताया है कि, लोग शव सामने होते हुए भी कितने व्यवहारीक बनते हैं। साथ ही दिखावटीपन का प्रदर्शन करते है, ऐसे समय भी उन्हें खाने की सुझती हैं। वर्मा कहता है - "ये साले शामतक यहीं बैठे रहेंगे।", "पहले कश्मीरी गेट चलते हैं। कुछ खाले । मुझे भूख लगी हैं।"41

कहानी में लेखक ने दिखावटीपन को प्रदर्शित करनेवाले लोगों का पर्दाफाश किया हैं।

पछतावा :

श्याम इंग्लंड से लौटकर आया है। इसलिए माताजी अपने बहू, बेटे ओर बेटी को श्याम जेसा बर्ताव करने पर मजबूर करती हैं। वे अपने हाथों व्दारा खाना चाहते है तो उसे काटों-चमचों से खाने को मजबूर करती हैं। खाना खाते समय चम्मच डिश पर आवाज करता है जेसे कि, घुड़दौड हो रही है। तो बहू को ही अपमानित किया जाता हैं। लेखक ने इस

कहानी में दिखावटीपन की समस्या को उजागर किया हैं। नायिका दिखावटीपन को लेकर कहती है – "अब कोई गुड़िया के समान बैठा रहे या खाए। मुझसे तो दो–दो काम एक साथ नहीं होते। जरा–सा पल्लू हटा, जरा–सा आंचल खिसका, तो यह उच्छृंखलता होगी, फिर केसे खाया जाए? 42

नालायक :

दिखावटीपन के कारण मध्यवर्गीय मनुष्य निरन्तर निराश होता जा रहा हैं। मेहमानों के सामने अपने असली रुप को छिपाने का प्रयास किया हैं। आजकल के खोखले दिखावटीपन का चित्रण कोहली ने इस कहानी में किया हैं। बेटों के बर्ताव से मां तंग आ गयी हैं। सब बेटे अपने मर्जी के मालिक हैं। मां अपने ननद के व्दारा बेटों की स्तुती करनेपर भी चुप रहती हैं। अपने बेटों के कारण माँ कष्ठ सहती हैं। "माँ ने भुआजी के बर्तन उठा लिये और रसोईघर में घुस गयीं। वहां वे रो तो सकेंगी, नहीं तो विपुल देख लिया तो नालायक रोने भी नहीं देगा।" लेखक ने यहां माँ की मनस्थिति का चित्रण बहुत ही खुबी से किया हैं।43

इन बच्चों के सदके :

भाटिया साहब की एक प्रिसिंपल बन जाने के बाद की स्थिति का चित्रण किया हैं। पहले वे एक साधारण लेक्चरर थे, तब उनहें दिखावटीपन की जरुरत नहीं थीं। लेकिन प्रिंसिपल बनने के बाद दिखावटीपन का बुरखा उन्हें चढ़ाना पड़ा वे जब पहाड़गंज जा रहे थे उसी समय अपने प्रतिष्ठा के खिलाफ वे एक तांगे में सवारी करने लगें। उस तांगेवाले में और उनमें कोई फर्क नहीं था उन्हें वह अपना ही सगा–सम्बन्धी लगरहा था। इसलिए उन्होंने सोच– "चलते तांगे में उससे लिपट जायें और कहें, "यार मेरे। क्या बात कही है तूने। इन बच्चों के सदके। आज का दिन सही–सलामत कह गया। तेरी क्या बात हे, मैं भी घर जाकर यहीं सोचा करता हूं....।"44 लेकिन यहाँ भी उनका दिखावटी पन बिच जाता हैं। वे तांगेवाले से नहीं लिपटें। उन्हें याद आ गया कि वे एक कॉलेज के प्रिंसिपल हैं।

7) विवाह की समस्या :

मनुष्य प्राणी समाजप्रिय प्राणी हैं। समाज में अनेक तरह के लोग होते हैं। जाति–पाँति, धर्म, रहन–सहन अलग–अलग होते हैं, फिर भी समाज में अनेक लोग इकठ्ठा होते है ओर संस्था स्थापित करते हैं। इसी प्रकार अनेक प्रकार की संस्थाएँ होती हैं। परिवार संस्था, विवाह–संस्था। और अन्य अनेक सामाजिक संस्थाओं का उद्दगम होता हैं। तो हर एक संस्था अपनी विशिष्ठता लेकर आगे बढ़ती हैं। साथ ही उसकी कई समस्याएँ भी होती हैं।

विवाह दो व्यक्तियों (भिन्नलिंगी) की आत्मा का मिलन होता हैं। दोनों एक दूसरें पर निर्भर होते हैं। जहाँ दोनों व्यक्तियों मे सामंजस्य होता है, वहाँ हमें सुखी सांसरिक जीवन दिखाई देता हैं। ओर दूसरी तरफ पति-पत्नी में यदि किसी भी प्रकार का मतभेद चाहे वह वैचारिक हो, आर्थिक हो ओर अन्य किसी भी प्रकार का हो, वहाँ संसार में विषम परिस्थितियों किसी भी प्रकार का हो, वहाँ संसार में विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। दोनों को भी पटती नहीं ओर दोनों एक दूसरे से अलग-अलग होना चाहते है ओर उसी कारण उनके रास्ते अलग-अलग होते है - कभी संयोग न होने के लिए।

समाज के सुसंगठन के लिए वैवाहिक समस्याओं का समाधान आवश्यक हैं। वेवाहिक समस्या भारतीय समाज की ही समस्या नहीं वरन् समग्र मानव समाज से सम्बध्दि हैं। प्रतयेक देश और जाति के लोग अपने-अपने आचार-विचार से विवाह के सम्बन्ध में सोचते हैं। सामाजिक संगठन में विवाह का महत्वपूर्ण स्थान हैं। कोहली ने अपने कहानियों में हिंदू समाज की वैवाहिक समस्या को स्पर्श किया हैं। विवाह की असंगतियों के कारण समाज में अनेक कुरीतियों का जन्म होता हैं। सामाजिक स्वास्थ की दृष्टि से स्त्री-पुरुष के वैवाहिक सम्बन्धों मे असंगतियाँ नहीं होनी चाहिए।

विवाह का महान आदर्श आज समाज में लुप्त हो गया हैं। दाम्पत्य जीवन का सुख आज दुर्लाभ वस्तु बन गया हैं। वैवाहिक असंगतियाँ आज घर-घर में विदयमान हैं, जिन्होंने स्त्री-पुरुषों के संबंधो को विकृत तो किया ही है, समाज की शांति भी भंग कर रखी हैं। हिन्दू समाज में वैवाहिक समस्या को सबसे अधिक जटिल दहेज-प्रथ ने बनायाहैं। अनेक सुंदर-सुंदर, सुशिक्षित और सुसंस्कृत लडकियाँ समुचित दहेज के अभाव में असुंदर मूर्ख और असंसकृत लड़कों से व्याह दी जाती हैं।

नारी-पुरुश एक दूसरे के संपर्क में आते हैं, तो उनमें बौध्दिक, शारीरिक आकर्षन बढ़ने लगता हैं। जब प्रेम विवाह में परिण्त होत है, तो इसे प्रेमविवाह कहते हैं। आधुनिक युग में नारी पुरुष के साथ घर के बाहर आ गयी हैं। सामाजिक जीवन के हर क्षेत्र में, शिक्षा संस्थाओं तथा दफतरों, कारखानों में काम करने लगी हैं। परिणामतः स्त्री-पुरुष परिचय होने के कारण उनमें परस्पर आकर्षण बढ़ने लगा हैं। धर्म जाति-पाँति को भारतीय समाज में आज भी बड़ा महत्व दिया जाता हैं। रुढ़ि-परम्परा के विरुध्द धर्म, जाति-पाँति का विचार न करके प्रेमविवाह करनेवाले स्त्री-पुरुष के जीवन में बहुत सी समस्याएँ पैदा होती हैं।

राजा दशरथ के बेटे :

यह कहानी नरेन्द्र कोहली की आरंभिक कहानियों में से एक हैं। इस कहानी के माध्यम से लेखक ने **विवाह की समस्या** को उजागर किया हैं। कथानायक के घर चार कुंवारे लड़के हैं। उनके पिताजी उनकी शादी करने में असमर्थ हैं। वास्तव में लड़के इस समस्या का हल ढूँढना चाहते है। वे विद्रोह करते हैं। अपने पिताजी को सम्बोधित करते हुए कहते है – "मैने तो पहले ही कह दिया था कि, इस घर में विवाह करी रीति ही नहीं हैं। पता नहीं पिताजी ने केसे भूल से विवाह कर लिया, नहीं तो यहां तो विवाह की आवश्यकता ही नहीं ळें। पंडित नेहरु को पता चले तो पिताजी को "पद्मश्री" से विभूषित करा दें कि, ऐसे लोग, भी है जो अपने चारों बेटों को कुंवारा बैठाए हुए हैं।"45 इस कहानी के माध्यम से लेखक ने विवाह की समस्या को चित्रित किया हैं।

नाबालिग वर :

आज–कल माता–पिता अपने लड़कियों की बीना राय लिए उसका विवाह किसी अनजान लड़के से करवाते हैं। चाहे नारी किती भी पढ़ी–लिखी क्यों न हो, उसके साथ यहीं सतूख किया जाता हैं। उसे कभी–भी स्वतंत्र नहीं समझा जाता। उसे समाजरुपी हथकड़ियो ने जखड़ लिया हैं।

कहानी नायिका सुषमा स्वावलंबी बनना चाहती है। वह स्वयं का निर्णय स्वयं लेना चाहती है, वह किसी नाबालिग वर से शादी नहीं करना चाहती। वास्तवं में वह विद्रोह करती है, पर असल में जब उस लड़के को देखती है तो उसमें परिवर्तन होता है वह उसे चाहने लगती हैं। लेकिन लड़केवाले लोगों को यह रिश्ता मंजूर नहीं है वे इनकार करते हैं। सुषमा उस लड़के को खत लिखना चाहती है, वह निडर बनती है और कहती है – "पर पिताजी को पता चला तो? पिताजी? उसे भय नहीं है पिताजी का, नहीं डरती वह पिताजी से। एकदम नहीं डरती...और उसे लगा, भय उसमें कतई नहीं हैं।46

पराथी हथेलियों पर टिका भविष्य :

कहानी की नायिका चारु एक जवान ओर अविवाहित लड़की हैं। उसके विवाह की पुरी जिम्मेदारी उसकी माँ पर हैं क्यों कि उसके पिताजी नौकरी के लिए किसी दूसरे शहर में गए थें। माँ भी नौकरी करती है उसे अपने जवान बेटी के विवाह की चिंता बिल्कुल नहीं। चारु विवाह करने को उच्छूक है पर उसका भविष्य उसकी माँ के हाथों हें। माँ को चारु के लिए जरा भी फुरसत नहीं हैं। लेखक ने इस कहानी में यह संकेत दिया है कि,

आज-कल माता-पिता अपने जवान बच्चों की मनस्थिती का उनके उम्र का, उनके विवाह का विचार नहीं करते। अपने ही कामों में मशगुल होते हैं। इससे समस्या उत्पन्न होती है। इस कहानी की नायिका बहुत ही स्वाभिमानी हैं। जब चारु अपनी विवाह तय करने के लिए माँको दीदी के घ्र जाने कहती है तो माँ कहती है - " तू ही चली जा। मुझे क्या करना है लड़का देखकर। निर्वाह तुझे करना हैं। जीवन भर का साथ हैं। तू लाकर अच्छी तरह देख-भाल लें। मैं तो लड़कियों की पूरी स्वतंत्रता के पक्ष में हूँ। क्या रखा है पुरानी बातो में।"47 इस वाक्य के व्दारा वह दिखावटीपन प्रदर्शित करती हैं। इस कारण आज विवाह की समस्या और ही बढ़ती जा रही हैं।

रसोई से लौटते पांव :

कहानी में आंतरजातिय विवाह की समस्या को चित्रित किया हैं। कहानी की नायिका सुनन्दा और हुतास का आंतरजातिय विवाह हुआ हैं। हुलास ब्राम्हण जाति का था। वह पड़ा-लिखा, सुसंस्कृत लड़का था। जाँति-पाँति में उसका विश्वास नहीं था, क्योंकि उसके पीछे कोई वैज्ञानिक आधार नहीं था। किंतु उसके परिवार में लोग इस चीजों को मानते थे। वे हुलास को विवाह करने से नहीं रोक सकते थें। विवाह के पश्चात् सुनन्दा को परिवार में वैसी मान्यता नहीं मिली, जैसी कि, अपनी बिरादरी से आयी बहुओं को मिलती हैं। फिर भी सुनन्दा बुरा नहीं मानती क्यों कि वह हुलास की पत्नी के रुप में परिवार में आयी थी। परिवार की बहू के रुप में नहीं। सुनन्दा की सास और जेठ-जेठानी जब सुनन्दा के घर आते है तो सुनन्दा के हाथो से बनाया खाना नहीं खाना चाहतें। यह बात समझाने के लिए हुलास सुनन्दा को अंदर ले जाकर कहता है - "वे लोग जितके दिन यहां रहेंगी, स्वयं पकाकर खाएंगी - तुम्हारे हाथ का पका नहीं खाएंगी। तुम्हारे लिए भी पका देंगी। सुनंदा, ये संस्कार..."48

सुनन्दो अब्राम्हमण होने के कारण वे उसके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से स्पष्ट किया है कि, आंतरजातिय विवाह करने से किस-किस समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं।

6) अकेलेपन की समस्या :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं। समाज में रहते हुए तथा अपने सगे-सम्बन्धियों के होते हुए भी मानसिक तनाव के कारण मनुष्य कभी-कभी अकेलापन महसूस करता हैं। परिस्थिति के दबाब में आकर उसमें घुटन-सी पैदा होती हैं। महानगरीय परिवेश में यह

अकेलेपन की समस्या विक्राल रुप धारण किये हुए हैं। भीड़ में होकर भी मनुष्य अपने आप को अकेला महसूस करता है। कोहली जी ने कुछ कहानियों में अकेलेपन की समस्या को रेखांकित किया हैं।

उजडे दयार में :

मनुष्य भीड़ में होकर भी अपने-आप को अकेला महसूस करता हैं। कहानी का नायक रमेश अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता हैं। वह जब मायके जाती है तो रमेश बहुत बेचैन होता हैं। वह अपने-आप को भीड़ में भी अकेला महसूस करने लगता हैं। रमेश स्वंय को अकेला-अकेला उदास-उदास अनुभव करता हैं। उसे सारी दुनिया सूनी लग रही थी।

इस कहानी में लेखक ने अकेलेपन की समस्या को चित्रित किया हैं। "उजेड़ दयार" के रुप में उस सच को सामने लाया है, जब यौवनाजन्य हिचक, संकोच पत्नी के अभाव को अभाव कहते हुए सकुचाता है पर संपूर्ण व्यवहार उस सच्चाई को पूरी नग्नता में उघाड़कर रख देता हैं और अपनी दृष्टि में सहानुभूति का पात्र उपहास का पात्र बनकर रह जाता हैं। इसलिए दिनेश कहता है "लगता नहीं है, जी मेरा उजड़े दयार में।"49

मेरा साथी कोई नहीं है :

आज मनुष्य भिड़ में भी अपने आप को अकेला महसूस करने लगता हैं। कहानी नायक कॅाफी हाऊस में बैठा है, चारों ओर लोग हैं उनके बीच वह अपने-आप को अकेला, उदास महसूस कर रहा हैं वह सोचता है - "हंसू? क्यों हसूं? खांऊ? क्यों खाऊ? पढं? क्यो पढूँ? ऐसी तैसी कैरियर की। मैं नहीं पढ़ता। मुझे कुछ अच्छा, नहीं लगता। मेरा साथी कोई नहीं हैं। मैं अकेला हूं।"50 इस कहानी में लेखक ने अकेलेपन की समस्या को उभारा हैं।

अनुभवहीन :

कहानी की नायिका सुहासा दिल्ली में अकेली थी। उसे कोई मिलने-जुलनेवाला चाहिए था। प्रवीण से उसकी पुरानी जान-पहचान थीं। वह उसके पचासों काम कर सकता था। दिल्ली में अकेली रहती परदेसी लड़की को किसी-न-किसी पुरुष का सहारा तो चाहिए ही था। सुहासा अक्सर प्रवीण के पास आती थी। प्रवीण उसे कहता है - "देखिए न, आप किसी की मंगेतर हैं, मैं किसी का पति। वैसे दिल्ली में आप भी अकेली है, मैं भी। क्या हम अपना अकेलापन भी नहीं मिटा सकते?"51 सुहासा अक्षर की मंगेतर हैं। अक्षय अमेरिका में रहता हैं। सुहासा अपना अकेलापन मिटाने के लिए प्रवीण से दोस्ती कर लेती हैं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है कि, मानव समाजशिल प्राणी हैं। वह कभीभी अकेला नहीं रह सकता। अकेलापन उसे खाने को उठ़ता हैं। इस अकेलेपन को मिठाने के लिए वह अपना शील भी खो बैठता हैं। जैसा कि इस कहानी में बताया गया है कि, सुहासा अपना अकेलापन मिटाने के लिए प्रवीण से दोस्ती करती हैं और उन दोनो में गहरा सम्बन्ध प्रस्थापित होता हैं। वह उसके साथ शारिरिक संम्बन्ध प्रस्थापित करती है। और अपना शील खो बैठती हैं। कहानी के माध्यम से लेखक ने अकेलेपन की समस्या को चित्रित किया हैं। साथ ही बताया है कि, इस अकेलेपन की समस्या के कारण समाज मे अनेक प्रकार के प्रश्न खड़े होते है।

दुहराव :

कहानी की नायिका राधा विवाह के पश्चात् अपनी घर गृहस्थी संभालने में मग्न हैं। दिनभर वह घर के कामों में ही लगी रहती हैं। विवाह के बाद उसने घर के सभी नौकरों को निकाल दिया था। उसकी तीन लड़किया है जिसका नाम गीता, रीता और नीता हैं। जब तक यह तीन लड़कियाँ है तो इनके पालन-पोषण में ही वह लगी है। अपने पति की ओर उसका खयाल नहीं हैं। जब लड़कियाँ जवान होती है तो वह उनका विवाह करवाती हैं। लड़कियाँ तो अपने ससूराल चली जाती हैं। उसके बाद राधा अपने-आप को अकेली महसूस करणे लगती हैं। वह भीड़ में भी स्वयं को अकेली समझती हैं। वह अकेलेपन को सह नहीं सकतीं सोचती है - "ये पहाड़-से-दिन कैसे करेंगे..."52 इस कहानी में लेखक ने राधा के माध्यम से अकेलेपन की समस्या को उजावर किया हैं।

9) टूटते सम्बन्ध की समस्या :

आधुनिक युग में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच एक विरापन, आजनबीपन, बढ़ता जा रहा हैं। जिसका प्रभाव सम्बन्धों पर पड़ता हैं। स्थिति यह है कि स्त्री-पुरुष पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन, प्रेमी-प्रेमिका आदि के सम्बन्ध महत्वहीन हो गये हैं। कथाकार कोहली ने अपनी कुछ कहानियों में टूटते सम्बन्धों को रेखांकित करने का प्रयास किया हैं।

आहत प्यार :

कहानी में जीजी और भैया का एक दूसरे से बहुत ही गहरा लगाव हैं लेकिन भैया की जब शादी होती हैतो वह अपने बहन के प्यार को भूलता है वह अपनी पत्नी से कहता है "आशा, मैं प्यार का भूखा हैं। मुझे प्यार दो। मुझे आज तक किसी का प्यार नहीं मिला। न मां का न बहन का, न ही भाइयों का। आशा, मैं तुम्हारे प्यार का भूखा हूँ।"53 भैया को

उसके घरवालों ने जिंदगीभर इतना प्यार दिया। फिर भी वह अपनी पत्नी के आने के बाद इस प्यार को भूलता है और अपने पत्नी के पास प्यार की भिख मांगता हैं। इस कहानी में लेखक ने भावुक और आहत भावनाओं को जगाया हैं। साथ ही टूटते हुए संबंध की समस्या को चित्रित किया हैं।

होनेवाली पत्नी :

आज–कल निर्जिव पदार्थो के समान नारी का क्रय–विक्रय होता है। वह असमर्थ है, इसलिए अत्याचार सहती हैं। समाज में उसका स्थान भोग्या मात्रा है। कहानी का नायक सतीश, संगीता का मंगेतर है। हाल ही में उनकी सगाई हुई थी कि सतीश उससे अनैतिक व्यवहार करता हैं। संगीता विवाह से पूर्व यह सब करना नहीं चाहती, वह विद्रोह करती हैं। सतीश को संगीता का बर्ताव अच्छा नहीं लगता। वह उसे खत लिखता है – "विवाह के पश्चात भी तुम जो कुछ करोगी, कर्तव्य समझकर ही करोगी, प्रेम से नहीं। अतः जो सुख मुझे नहीं मिल सकता, उसकी इच्छा भी छोड़ रहा हूँ...।"54 पत्र पढ़कर संगीता सबकुछ ज़ानती हैं। लेखन ने इस कहानी में पुरुष का अहंकार और नारी की पीड़ा को व्यक्त किया हैं। साथ ही साथ टूटते हुए सम्बन्ध पर प्रकाश डाला हैं।

सीमा के आर–पार:

कहानी नायिका की अम्मा का व्यक्तित्व बहूत ही तीखा हैं। वह अपने पति के साथ भी हमेशा झगड़ती हैं। अम्मा की किसी के साथ भी नहीं बनतीं। अम्मा ने अपने ससूर से झगड़कर ही पुरी जायजाद इकठ्ठी की थीं। वह बाबूजी को उनके निकम्मेपन को लेकर कोसती हैं। नायिका की शादी करने की रट भी लगायीं बैठती हैं। नायिका का कर्तिकेय से प्यार होता हैं और शादी भी उसी से होती हैं। कुछ दिन बाद अम्मा अपने दामाद पर भी अपना गुस्स उतारती हैं। नायिका इस बात को नहीं सह सकतीं। पहले दिवाली के त्योहार पर ही अममा उन दोनों को अपमानित करती हैं। इससे नायिका और अम्मा में झगड़े होते हैं। इसके नायिका बहुत ही क्रोधित होती हैं। वह अपने अम्मा से हमेशा के लिए सम्बन्ध तोड़ती हैं। अपने पिताजी के कहनेपर भी घर नहीं आतीं। रोज–रोज के झगड़े से तंग आ चुकी थीं। उसने क्लेश, सीमा के उस पार छोड़ा था, उसे इस पार नहीं लाना चाहती थीं। इस कहानी में लेखक ने माँ–बेटी के टूटते हुए सम्बन्ध पर प्रकाश डाला हैं।

10) सामाजिक समस्या :

मनुष्य सामाजिक प्राणी हैं। साहित्य समाज का दर्पण होता हें। उसकी सामाजिक अनुभूति साहित्य में अभिव्यक्त होती रहती हैं। वह अपने आस-पास के समाज में जो कुछ देखता है, सुनता है, महसूस करता है, जिसका उसे अहसास होता है, उन सभी को वह अपनी लेखीन से चित्रबद्ध करता रहता हैं। समाज में व्यक्तियों की मूलभूत आवश्यकताएँ बढ़ती है। और सामाजिक संस्था तथा संस्कृति उसे पूर्ण करने में असमर्थ या अयशस्वी हो जाती है तब जो स्थिति पैदा होती है, उसे ही सामाजिक समस्या कहा जाता है। समाज में आए हुए परिवर्तन और उसकी प्रक्रिया से निर्माण हुए सामाजिक विघटन के परिणामों कारण ही विविध सामाजिक समस्याचे निर्माण होतीं हैं।

हिन्दुस्तानी :

ऑफिस में आम तौरपर कामकाज किस प्रकार चलता हैं। तथा ऑफसि के बॉस स्त्रीयों के साथ कैसे बर्ताव करते हैं। बॉस उटकर काम करने के बजाय जी खोलकर ऐश करते हैं। इस बात को लेखक ने अपनी ओजस्वी भाषा और शैली से उभारा हैं। आज के युग में लड़कियाँ मॉर्डन होने के नामपर देह प्रदर्शन कर रही हैं। उन्हें अपने इच्च्दत का खयाल नहीं हैं। अमरिकों का भारतीयों के प्रति तिरस्कारपूर्ण तथा घृणामय दृष्टिकोन हैं। वे भारतीयों को अरबों के साथ संबंध प्रस्थापित नहीं करने देतें। भारतियों के मन में आत्मविश्वास की कमी तथा हिम्मत के साथ वह वरिष्ठ अधिकारी के सामने जा नहीं सकता अपने भारत को हीन समझकर भारतीयों की पत्नी होना भारतीय लड़कियों को शर्मनाक बात लगती है, लेकिन अमरिकन लोगों के साथ बिना विवाह के उनके बच्चे की माँ बनकर अपने-आप को इज्जतदार समझे बैठती हैं। आज-कल समाज में जो नई-नई समस्याएँ अभर रही है उसका चित्रण लेखक ने अपनी ओजस्पी भाष और शैली से किया हैं।

हत्यारा :

समाज में सामाजिक स्थिति सुव्यवस्थित रखनेके लिए पुलिस होती हैं। गुनहागारों को खोजकर उन्हें सजा देने के लिए पुलिस होती हैं। लेकिन पुलिस और प्रशासन में भ्रष्टाचार बढ़ गया हैं। कानून के अधिकारियों ने अपने हाथ में कानून लिया हैं। और गुंडो या गुनहागारों को भी कानून हाथ में लेने का मौका दिया है। आज-कल पुलिस विभाग के लोग समाज का रक्षण करने के बजाय उनके साथ छिनौना बर्ताव करते हैं। किशनचंद के बेटे की मृत्यु हुई हैं और इसका जिम्मेदार पुलिस लोग किशनचंद के बेटे की मृत्यु हुई हैं और इसका

.जिम्मेदार पुलिस लोग किशनचंद को ही ठहराते है। उसके वृध्दावस्थापर थानेदार को दया नहीं और नही मृत बेटे के दर्दनाक हादसे का कोई परहेज। समाज के रीति का उल्लंघन कर उस वृध्द को थानेदार थप्पड मारता हैं। अपनों से बड़ो के साथ किस प्रकार बर्ताव करना है इस ज्ञान से आज का युवक अनभिज्ञ हैं। खुनी की खोज कराने के लिए थानेदार किशनचंद को खिड़की से कुदने के लिए कहता है, थानेदार जान बुझकर किशनचंद को मौत के मुँह में ढकेल देता हैं। और उसका "हत्यारा" खुद ही बनता हैं। आज के पुलीस अफसरों का बेजबाबदार वर्तन का सजीव चित्र नरेन्द्र कोहली ने अपने इसे कहानी में खिंचा हैं।

11) धार्मिक समस्या :

समाज में धर्म का अनन्य साधारण महतव रहा हैं। जिसके आचरण के कारण मनुष्य में श्रेयस्कर की ओर बढ़ने की लालसा या चाह रही हैं। मनुष्य के आचरण को हितकर बनाने के लिए "धर्म" की सहाय्यता तथा नियमन रहा हैं।

वास्तविक दृष्टिकोण से "धर्म" का अर्थ नियम, जो स्वयंमानव के हृदय तथा मन में विदयमान हैं। वह सदाचार का नियम हैं। धर्म किसी खिजों तथा कर्म काण्डों का सकूह नहीं बल्कि एक ऐसा विश्वास है जो किसी अनन्त सर्वतिशायी तत्व या सत्य पर केन्द्रीत होता हैं। निसर्ग मे होनेवाले अत्यत्न पवित्र मानवी जीवन से संबध्द जीवन, विश्व तथा निसर्ग इनपर नियंत्रण रखनेवाली अलौकिक शक्ति पर मनुष्य की श्रध्दा होती हैं। उस शक्ति का अनुकूल पवित्र तथा घनिष्ट संबंध स्थापित करनेवाली अथवा सामाजिक मनःप्रवृत्ति तथा उससे निर्माण होनेवाली आचरण पध्दति को ही धर्म कहा जाता हैं। इष्ट की प्राप्ति के लिए और अनिष्ट के निवारण के लिए अलौकिक शक्ति की, की गयी साधना या प्रार्थना ही "धर्म" कहलाती हैं। जो श्रेयस्कर तथ कर्मकुशल होता है उसे ही धर्म कहा जाता है ओर जो अकुशल तथा अश्रेयस्कर होता है उसे ही अधर्म कहा जाता हैं। अप्रचलित धर्म के पालन करने में व्यक्ति जिस आचरण का अवलंब करता हैं। उसमें अविश्वास करनेवाले व्यक्ति अधार्मिक कहे जाते हैं। इनके इस प्रकार आचरण के कारण ही धार्मिक समस्या निर्माण होती हैं।

मुसलमानों ने भारत में जब अपनी जड़ जमाई और अपने राज्य विस्तार के साथ धर्म विस्तार करने का प्रयत्न शुरु किया तब भी धार्मिक समस्याएँ निर्माण हुयी। अँग्रेजो के शासन काल में अँग्रेजों की दोन गली नीति के कारण हिन्दू-मूसलमानों में फूट के बीज बोचे गये और उसी के फल-स्वरुप हिन्दू-मुसलमानो के दंगे होते रेहे। 1947 में धर्म के नामपर भारत का विभाजन हुआ उसी सिलसिले में व्यापक रुप में हिन्दू मुसलमान संघर्ष होता रहा और आज भी छूट पूट कारणों में मनमुटाव होता हैं। तब धार्मिक समस्या निर्माण होती हैं। और सामाजिक अशांतता निर्माण होती हैं।

हमारे समाज में भूत-प्रेत-गृह-नक्षत्र, राशिभविष्य, धार्मिक चमत्कार आदि पर विश्वास रखनेवाले और भूंत प्रेतादि की बाधाओं से मुक्त होने के लिए मन्त्रतंत्र आदिपर विश्वास रखनेवाले लोगों की कभी नहीं हैं। बुध्दिवादी वग्र ऐसी बातोंपर विश्वास नहीं रखता। परंपरागत विश्वास और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलस्वरुप निर्माण होनेवाले अविश्वास में निरंतर संघर्ष चलता है और धार्मिक समस्या निर्माण होती हैं।

रसोई से लौटते पांव :

यहाँ सुनन्दा और हुलास का अंतरजातिय विवाह हुआ हैं। फिर भी जात-पात की समस्या उभरी है। वह अब्राहमण होने के कारण उसके हाथोव्दारा पकाया अन्न खाने से वे लोग इन्कार करते हैं। "उच्च वर्ण की क्षत्रिय कन्या यहां आकर अछूत हो गई हैं.... कोई उसके हाथ का पकाया खाएगा नहीं, कोई उसको खाना पकाने नहीं देगा...."55 हुलास उससे प्यार करता है लेकिन फिर भी वह अपने माता, भाई और भाभी के कहनेपर सब मान जाता हैं। वह सुनन्दा को ही समझाता हैं। वह बड़ी सूक्ष्मता से उसकी प्रतिक्रियाओं को देखता हैं। उसे कहीं भी इस अपमान ने आहत नहीं किया था। और उसने बुरा भी नहीं माना था। आज-कल प्रेम-विवाह मे सबसे बड़ी धार्मिक समस्या उभरती हैं। पहले तो जाँत-पाँत नहीं देखी जाती और फिर यह समस्या उभरती हैं।

संचित भूख :

देश के विभाजन के समय हिन्दू-मुसलमानों के बीच हुए दंगो-फसाद का चित्रण किया हैं। विभाजन के वक्त मुसलमान लोगों ने हिन्दूओं के घर जला डाले। कैम्प में अपनी बीमार माँ की हालत देखकर गोपाल कफर्यु में अपने घर जाकर कुछ सामान लाना चाहता हैं। लालाजी बिरजू को साथ देते है, ताकि उनके लिए कुछ चीजें लाने को.कहते हैं।

"साईकिल पर आने से, और घर का नौकर बिरजु जब गोपाल के कहने पर खाना पकाता हे, घर का मालिक वहाँ उपस्थित नहीं थं, इसलिए वह बासमती चावल शुध्द घी में पकाता है, मालिक की मर्ग पतलून पहता है, मालिक के विस्तर पर उसका हूक्का पीकर सोता हैं।

बिरजू यह भी भूलता है कि उसकी जान खतरें में हैं। भूख के कारण वह अपना डर भूल जाता है, और अपनी "संचित भूख" खाना पकाकर, खाकर मिटा देता हैं। उधर गोपाल बाबू यह सब देखकर हतप्रभ हो जाता है, वह सोच रहा था रात को यहाँ से केसे निकले, मगर बिरजू सोया था।

कहानी के माध्यम से लेकख ने धार्मिक समस्या को उभारा हैं।

12) पिता–पुत्र बिगड़ते सम्बन्ध समस्या :

उन्तराधिकार :

आज–कल पिता–पुत्र सम्बन्ध बिघडते जा रहे हैं। वे अपने उत्तराधिकार को भूल रहे हैं। कहानी का नायक सलूजा, जिसके पिताजी बीमार हैं। वह अपने पिता की देखभाल करने के बजाय उसके मरने का इन्तजार करता हैं। घर में अपने बिमार पिता को अकेला छोड़कर अपने पत्नी के साथ पार्टी में चला जाता हैं। उसके पिताजी की हालत एकदम खराब हो गई थीं। वे बिमारी से निढाल हो चुके थें। आवाज नहीं निकलती थी, किसी को पुकार भी नहीं सकते थे ऐसे स्थिति में बेटा अपने पिता को कोठी से परे, गैरेज के पासवाले किसी सर्वेह क्वार्टर मे भेजना चाहता है। लकिन समाज लज्जा के कारण बहू ने उसे ऐसा करने से रोका पार्टी से बहू सलूजाको जल्दी घर जाने के लिए कहती है तो, बेटा कहता है – "ओ–हो। मुझे मालूम है, हालत खराब होगी। सलूज साहब बोले इसलिए मैं घर नहीं जाना चाहता।"56 बेटा पार्टी में जाता है तो वहाँ भी अपने पिता के मरने का इन्तजार करता हैं। लेखक ने आज–कल के बेखबर पुत्रों पर प्रकाश डाला हैं। उनके माता–पिता बचपन से उनहे पालने पोसते है ओर बड़े हो जाने के बाद वे ही बेटे बीमारी में पिता का साथ देने के बजाय उसके मरने का इन्तजार करते हैं। मरते समय उन्हें पानी भी नहीं देतें।

"पिताजी मर चुके थे उनका हाथ गिलास तक नहीं पहुंचा था, और प्यास उनके सूखे होठों पर मौत के साथ जम गई थी।"57 इस बेखबर बेटे का बाप मर चुका है और वह अपने पतनी से कहता है – "सुधा। ब्रेक फास्ट लगवा दो और मेरे दफ्तर फोन कर दो कि, मैं नहीं आ रहा हूँ।58

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से पिता–पुत्र सम्बन्ध समस्या को चित्रित किया हैं।

"पहचान :

कहानी में लेखक ने पिता–पुत्र संम्बन्ध समस्या को उभारा हैं।

अनिल बचपन से चित्र निकाल रहा था, लेकिन एक चित्र बनाने के लिए 5 पिरियड छोड़कर गया, पिता के लिए वह चित्र बना रहा था, लेकिन वही चित्र पिता ने फाड डाला था। पिताजी अपने बेटे की प्रतिभा समझ नहीं पारहे थें। अनिल के कलामहाविद्यालय में प्रवेश लेने के बाद पिताजी बहुत क्रोधित हुए। उनकी इच्छा थी अनिक व्यावसायिक कला का प्रशिखण ले। किन्तु अनिल अपने पिता की बात नहीं समझ पा रहा था। उन दोनों में जोरदार झगड़ा हुआ।

अनिल के पिता और अनिल अपनी दूरियों मिटाना चाहते थे, "पापा इसलिए अपने

रिश्तेदारों में से कोई अच्छी सी लड़की देखकर उसका विवाह करें और अनिल ऐमिली के और अपने विवाह पर आशिर्वाद पाने।"59 लेकिन उसकी यह इच्छा पूरी नहीं हुयीं।

इस कहानी के माध्यम से लेखक ने बताया हे कि, एक-दूसरे के विचारों को न समझ पाने के कारण किस प्रकार तणाव बढ़ता है इसका चित्रण किया हैं।

अहसान :

कहानी में लेखक ने मानवता की समस्या को उभारा हैं। कहानी में मानवी प्रवृतती की ओर संकेत डाला हैं। जिस लड़की की इज्जत लेकर उसे बेचना चाहता थं, वही लड़का अपने भंई का पची खराब होने पर उसी लड़की के पिता जिनसे पास वह पची आया थं, उनसे कहकर वह अपने भाई को पास कराना चाहते हैं।

हानी में लेखक ने बताया है कि क्रूर व्यक्ति के मन में भी दया आ सकती है, यह भी चित्रित किया है - "चारो साथी लड़की को भगाकर ले जाकर बेचना चाहते थे, मगर लड़की उनके पेर पकड़कर मुंझे छोड़ दो....क्या मिलेगा?" कहती हैं।"60 तो उस आदमी का संकल्प ढ़ीला पड़ता हैं।

अंतमें लड़की जब उसी लड़के को अपने सामने देखकर श्चिय नहीं कर पा रही थी, यह वही लड़का है, जो उसे बेचना चाहता था या अब हाथं जोड़े सामने खड़ा अपने भाई को पास करने की बात कर रहा है," यह जर है या पशु, 'उसे पुलिस में दे या कृतज्ञापुर्वक इच्छा पूरी की जाये।"

लड़का अपना शालिनरुप आगे करके कहता है "आदमी ही आदमी के काम आता हे। दुनिया मे लेन-देन है, भला करने से ही भला होता है।"61

इस तरह लेखक कहना चाहते है कि, आदमी के दो रुप होते है जिसे वह समय के अनुसार, स्वार्थ के लिए उपयोग मे लाना हैं।

किरचे :

कहानी में लेखक ने मानवता की समस्या को उभारा हैं। कहानी खतरें में पड़ी मानवता की मृत्यु की घोषणा नहीं है, जो कहानी के उपरी स्तर पर महसूस हो सकता हें। प्रत्युत उसे मानवता की घोषणा करती हें, जो अपराजेय हैं। इसलिए विषमतम हालात में भी "जीवन्त हैं।

मानव के दुर्विकारों का शिकार हो ओर लि की होने वाली बच्ची की मृत्यु हो गई है -

"और नर्स ने बच्चे के सिर को एक ओर घुमाते हुए हो को बच्ची का बायां गाल दिखाया। गाल पर एक बड़ा-सा ताजा घाव था। चमड़ी फटी हुई थी। और नंगा लाल मांस दिख रहा

था। यह बम के उस धातु के टुकड़े से हुआ हैं, नर्स बोली, "जो श्रीमती लि के नितम्ब में घुस गया था।"62

किन्तु बच्ची की मृत्यु मनुष्यता की मृत्यु नहीं है, क्योंकि हो और लि अभी जिन्दा हैं और उनके मन का राग – एक–दूसरे के प्रति लगाव और आँख का आंसू जो मानवीय करुणा के प्रतिबिम्बित करता हैं।

"जीती–जागती लि उसके सामने लेटी हुई थीं। उसकी आंखो से आंसू टप–टप गिर रहे थें। हो को देखकर लि एक बार जोर से सुबकी और फिर उसी प्रकार शान्त होकर रोती रहीं।

"हो के सिर से मानों बोझ हट गया। उसके होंठोपर एक मुस्कान फैल गई।"63

वृत्त :

कहानी में लेखक ने निम्नवर्ग की समस्या को चित्रित किया हैं। लेखक ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि, उच्चवर्ग के लोग निम्नवर्ग के लोगों को किस तरह पिसते हैं। उच्च वर्गीय लोग तो इन लोगों के पसीने से ही अमीरी का बुरखा ओढते हैं। महलों में रहकर ऐश–आराम करते हैं। लेकिन निमनवर्गीय लोगों को दो वक्त की रोटी तो केसे–वैसे मिलती है लेकिन उन्हें रहने के लिए जो घर दिए है वो भी उखाड़ रहे हैं। निम्नवर्गीय लोगों को इनके हवेली से कोई लालच नहीं है वे भगवान से सिर्फ दो वक्त की रोटी मांगते हैं, और ऐसे समय कोई भी सरकारी अफसर आता हैं और उन्हें उनकी झूकियाँ उठ़ाने को कहता हैं। तो चौथा राम कहता हैं "यहां पड़े रहे हैं, तो किसी काक्या लेते हैं। हम कब कहते है कि यह धरती हमारी है, जिसकी है वह आए तो हम कहीं और चले जाएंगे। पर जब तक सपाट पड़ी हे, तब तक हमे रहने क्यों नहीं देते।"64 लेखक ने इस कहानी के माध्यम से बताया है कि, उच्चवर्गीय लोग बड़े–बड़े महलों में रहते है और जमीन के खाली टुकड़े पर ए गरीब लोग अपना घर बसाए हुए है तो वे उनका घर उजाड़ रहे हैं।

कपूर :

कहानी में लेखक ने आज के युवा पिढ़ी में चित्रित समस्याओं की ओर प्रकाश डाला हैं। कहानी का नायक कपूर के माध्यम से लेखक ने आज के युवक के बेखबर वर्तन पर प्रकाश डाला हैं। कपूर होस्टेल में रहता हैं। लेकिन होस्टेल के नियमों का पालन करने के बजाय नियमभंग करता हैं। उसका अनुकरण दूसरे छात्र भी करते हैं। जब होस्टेल के एक–एक लड़के का सामान टैक्सी में रखा जाता है और वह दोस्तों से मिलकर टैक्सी में बैठता है और टैक्सी चल पड़ती तो कपूर उन्हें "मां–बहन की गालियां देने लगता। उसका रुप बहुत बदल चुका था।

"ये घर क्यों जा रहे है? वह जैसे आपे में नहीं था।

"तुम भी क्यों नहीं चले जाते? मैने पुछा

मेरा बाप नहीं चाहता...।"65

कपूर की आंखे छलछल आयी थीं। उसकी आवाज रुंध गयी थीं। कहानी के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है कि, आजकल के माता-पिता अपने बच्चों की ओर ध्यान नहीं देते उन्हें योग्य सलाह नहीं देने के कारण उनमें अनेक समस्याओं का निर्माण होता हैं।

मारिसनगर:

कहानी में महानगरीय समस्या को उभारा हैं। कहानी के माध्यम से महानगर में रहनेवाले लागों के जीवन का चित्र खिंचा हैं। उन्होंने स्वयं ही अपने उपर समय की पाबन्दी लगाई हैं। सुबह उन्हें अखबार चाहिए क्योंकि लेखक ने स्वयं कहा है कि, "अगर मैं उठ गया होता और पंडियजी अखबार न दे गए होने तो झल्लाहट होती। आखिर इतनी सुबह कोई और कर भी क्या सकता है सिवा अखबार पढ़ने कें।"66

आज महानगर में बढ़ती आबादी के कारण अनेक समस्या निर्माण हो रहे हें। कहानी में बताया गया है कि, सुबह साढ़े आठ बजे युनिवर्सिटी की बस के लिए लड़के-लड़कियाँ बस स्टॅाप पर इकठ्ठा होते हैं। उन्हीं से शोर से सारा शहर जाग जाता हैं। लड़के लड़कियों के फ्रेश चेहरे देखकर सूस्ती हट जाती हैं। लेखक भी बस स्टॅाप पर खड़े रहकर देख रहे थें। थोड़ी देर बाद एक साहब लेखक के पास आकर खड़े हो गये पर अब वे मौलवी हो गये थें। लेखक ने चार साल पहले देखा था तब वे साहब नहीं थे, अच्छे-खासे स्मार्ट लड़को की तरह थे। लेकिन आज अकेले थे। लेकिन चार साल में वे बदल गये थे - "अब हाथ में "चारमीनार" सिगरेट का पॅकेट निकाला इधर-उधर देखा, लेखक को देखकर भी अनदेखा कर दिया, क्योंकि लेखक मारिसनगर के पर्मनंट फीसर कभी नहीं रहे।"67

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से महानगर में बढ़ती आबादी के कारण अनेक समस्याएँ उभर रही है इस बात को स्पष्ट किया हैं। जनसंख्या बढ़ गयी है, उनके वक्त इतनी भीड नहीं थी वे कहते है -

"कभी सोचता हूँ तो लगता है पुरुष जैसा मूर्ख जन्तु भी भगवान ने कोई बनया।"68

घर में एक मौत :

कहानी में लेखक ने अंध विश्वास की समस्या को उभारा हैं। दो वर्ष पहले, चाचाजी अपनी पहली नौकरी छोड़कर नयी नौकरी पर आए थे उसी समय वहां के लोगों ने उन्हे बताया कि, जिस आदमी के जगह वे आए है वह क्षयरोग से मरा था। उन्हे लोगों ने पुराने

फर्नीचर बदललेने की सलाह भी दी थी। लेकिन चाचाजी को इन बातोंपर विश्वास नहीं था। सप्ताह भर में ही चाचाजी लौट आते है क्योंकि उन्हे इस बीमारी ने ग्रस्त किया था। चाची ने उनका इलाज किया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। आखिर इसी बीमारी में उनका अंत हुआ

बिरादरी के लोगो ने उनका शव स्मशान में लाया, लेकिन वहाँ अग्नि देने की समस्या उभर आयीं। घर के सबसे बड़े होने के कारण अग्नि देना ताऊजी का कर्तव्य था। लेकिन उनका मन अग्नि देने से कतरा रहा था। क्योंकि "अन्धश्रध्दा यह थी, चाचा क्षयरोग से मरे थे और क्षयरोग से मरे मुर्दे को आग देकर, कौन स्वयं क्षयरोग से मरने का जोखिम उठाता।" इसलिए उन्होंने विलाप करके कहा – "काका। बेटे। चाचा को आग दो। ओ, मुझे कुछ नहीं दिखता। ओ, मैं अंधा हो गया।"69

"ताऊजी चाचा को आग दे नहीं रहे थे। मुझे चौधरी देने नहीं दे रहा था।... चाचा आग की प्रतीक्षा में थे।...70 सहसा चाची आगे बड़ी और चौधरी के हाथ से अग्नि ले ली ओर चाचा को आग दे दीं।

लेखक ने इस कहानी के माध्यम से सुचित किया है कि, अग्नि का अंतिम संस्कार हैं, अन्धविश्वास के कारण उसमें भी समस्या खड़ी हो जाती हैं।

पद–प्रतिष्ठा:

कहानी में महाविदयालय की समस्या को चित्रित किया है। इसमे महाविद्यालयों मे चलता भ्रष्टाचार, अध्यापकों की स्थिति तथा अध्यापक–विदयार्थियों के बदलते हूये रिश्ते को चित्रित किया हैं। साथ–ही–साथ महाविद्यालयीन समस्या की ओर प्रकाश डाला हैं।

डॉ. मेहता आदर्शवादी प्रोफेसर हैं। कॉलेज के लड़को ने हड़ताल की थी, उनसे समझौता करने गये डा.मेहता ने उनकी शिकायते सुनी, तो लगा ये उनकी अपनी समस्याये बता रहे है जैसे – "पीने का पानी गंदा होना, कैंटिन की हालत वहाँ का व्यवहार, लायब्ररी की समस्या आदिं।

महाविद्यालय में विदयार्थियों के लिए लिया गया कूलर प्रिन्सिपल अपने घर ले जाता है, कालेज का कैरम बोर्ड उनके पोते–पोतियाँ के लिये घर जाता है, लायब्ररी की मैंगजीन पहले प्रिन्सिपल के घर जाकर बाद में जब नया अंक आने के वक्त लायब्ररी पहुँचती हैं। अधिकार प्रिन्सिपल को होने के कारण अन्य अध्यापक उनके विरोध में कुछ कर नहीं सकतें। अध्यापकों ने प्रिन्सिपल के खिलाफ कुछ किया तो वह उच्छृंखलापूर्वा व्यवहार माना जाता हैं। अन्य अध्यापकोंकी आँखो में उपेक्षा आ जाती हैं। वे प्रिन्सिपल के ब्लैंक लिस्ट में आये होंगे प्रिन्सिपल उन्हें उत्तरदायित्व हीन और खतरनायक आदमी मानने लेगे होंगे।"71

इस प्रकार लेखक कहना चाहता है कि, अधिकार का दूरुपयोग, गुरु-शिष्य के संबंध में आया बदलाव, आदर्श का अभाव, कॉलेज के लड़को का प्रभाव आदिके कारण शिक्षा संस्था का स्तर धीरे-धीरे नीचे जा रहा हैं। शिक्षा संस्थापर जो विश्वास था अब नष्ट हो रहा हैं।

निष्कर्ष :

नरेन्द्र कोहली की अधिकांश कहानियों का मूल्यांकन उनकी कहानियों में चित्रित समस्याओं के परिपेक्ष्य में किया गया हैं। नरेन्द्र कोहली जी की कहानी में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक समस्या देखी गयी हैं। सामाजिक समस्याओं में नारी समस्या, प्रेम समस्या, पारिवारिक समस्या, पति-पत्नी सम्बन्ध की समस्या, अकेलेपन की समस्या आदि चित्रित हैं। धार्मिक समस्या के अंतर्गत जाँति-पाँति की समस्या को होहली जी ने रेखांकित किया हैं। आर्थिक समस्या के अन्तर्गत बेरोजगारी, अर्थ अभाव, गरीबी आदि का चित्रांकन हैं। अन्ततः यह कहा जाता है कि, कोहली जी ने अपनी कहानियों मे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक समस्याओं को व्यापक रुप उठाने का प्रयत्न किया है। नरेन्द्र कोहली एक सशक्त लेखक है और उन्होंने मानव जीवन से सम्बन्धित समस्याओं को समग्र रुप में उठाकर उनके यथार्थ चित्रण का प्रयत्न किया हैं। अधिकतर उन्होंने नारी समस्या और पति-पत्नी सम्बन्ध समस्या को कहानियों में स्थान दिया हैं।

संदर्भ

1) उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व : नरेन्द्र कोहली पृ.11

2) वही वही पृ.11

3) जैन महेन्द्रकुमार – हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण – प्राक्कथन से

4) वही वही

5) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.336

6) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 2 पृ. 18

7) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.118

8) वही पृ.168

9) वही पृ.180

10) वही पृ.208

11) वही पृ.295

12) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 2 पृ.2

13) वही पृ.2

14) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.20

15) वही पृ.62

16) वही पृ.113

17) वही पृ.93

18) वही पृ.176

19) वही पृ.286

20) जैन महेन्द्रकुमार – हिन्दी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण – प्राक्कथन से

21) वही वही

22) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.79

23) वही पृ.9

24) वही पृ.46

25) उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व : नरेन्द्र कोहली पृ.34

26) उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व – नरेन्द्र कोहली पृ.34

27) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग –1 पृ.68

28) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 2 पृ.144

29) वही पृ.211

30) वही पृ.219

31) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.183

32) वही पृ.236

33) वही पृ.265

34) वही पृ.268

35) उपाध्याय नर्मदा प्रसाद – व्यक्तित्व एवं कृतित्व : नरेन्द्र कोहली पृ.36

36) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.157

37) वही पृ.254

38) वही पृ.193

39) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 2 पृ.44

40) वही पृ.45

41) वही पृ.47

42) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.165

43) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 2 पृ.106

44) वही पृ.193

45) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.13

46) वही पृ.45

47) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 2 पृ.160

48) वही पृ.262

49) कोहली नरेन्द्र – समग्र कहानियाँ भाग – 1 पृ.25

50) वही पृ.136

51) वही पृ.300

52) वही पृ.227

53) वही पृ.90

54) कोहली नरेंन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 1 पृ. 105

55) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 2 पृ. 262

56) वही पृ. 249

57) वही पृ. 250

58) वही पृ. 317

59) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग -1 पृ. 148

60) वही पृ. 150

61) उपाध्याय नर्मदा प्रसाद - व्यक्तित्व एवं कृतित्व नरेन्द्र कोहली पृ. 365

62) वही पृ. 37

63) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 1 पृ. 318

64) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 1 पृ. 202

65) वही पृ. 186

66) वही पृ. 187

67) वही पृ. 188

68) कोहली नरेन्द्र - समग्र कहानियाँ भाग - 2 पृ. 48

69) वही पृ. 53

70) वही पृ. 128